आव का शुभ संदेश

प्रथम पुष्प

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय–सूची	पेज नंबर
1	ऐसी सुबह ना आए (भजन)	8
2	जय शंकर भोले (भजन)	8
3	छोडने में मजा है	9
4	परमात्मा के अच्छे बच्चे बनें	10
5	भगवद् गीता श्लोक (२.३८)	10
6	अहंकार–अभिमान	12
7	अच्छी बहु	13
8	अति का भला न बोलना अति की भलि न चुप, बच्चों में संस्कार	14
9	भगवद् गीता अध्याय–३	14
10	क्रोध	15
11	काम वासना पूरी न होने पर स्वयं के काम न होने पर क्रोध आता है	16
12	गुस्सा	16
13	सेवा	17
14	गीता में कर्मयोग सिद्धांत	17
15	मेरे प्रभु को जो अच्छा लगे	18
16	गुरु पूर्णीमा	19
17	दीना बन्धु दीना नाथ मेरी डोरी तेरे हाथ	20
18	गर्व–अभिमान	20
19	सुहृद भाव	21
20	धर्मात्मा होने का असर	22
21	प्यार	23
22	देना	24
23	संत कबीर दास दोहा–१	24
24	संत कबीर दास दोहा–२	24
25	हमें बदलना पडेगा दुनिया नहीं बदलेगी	25

26	अनासक्ति	26
27	अनासक्ति–भक्ति–सेवा	27
28	शिव प्रागट्य	28
29	द्वेत भाव – अद्वैत भाव	28
30	मुझे ब्रह्म ज्ञान है	29
31	मेरे जीवन का लक्ष्य	30
32	आनंद का अनुभव	30
33	अच्छी आदतें	31
34	भजन के शब्दों में तल्लीन होना	31
35	भगवान से क्यां मांगे ?	32
36	लव इज़ हेवन, हेवन इज़ लव	32
37	गीव (देना)	33
38	भाव से	33
39	विजितात्मा	34
40	तो क्या ? (Then What ?)	35
41	सुहृद भाव	36
42	प्यार दो	36
43	प्रार्थना	37
44	सुहृद भाव	37
45	फिक्र, चिंता, टेन्शन	38
46	मितभाषी – मिष्ट भाषी – अर्थ भाषी	39
47	खुशियां आनंद हमारा हक है स्वभाव है	40
48	जल्दबाजी में निष्कर्श न निकालें	41
49	ईश्वर के उपर सम्पूर्ण विश्वास	42
50	गाडी और शरीर	43
51	परमेश्वर का साथ	43
52	धन्यवाद और माफ करो	44

53	सहज से जो होता है उसे स्वीकार करें	45
54	कुछ भी किया हुआ काम व्यर्थ नहीं जाता है	46
55	हम अक्सर भगवान को दोष देते है	46
56	किसी से कुछ ले नहीं	47
57	માં-બાપ	47
58	દીનબંધુ દીનાનાથ મેરી ડોરી તેરે હાથ	49
59	મોજમાં રહેવું મોજમાં રહેવું રે	50
60	ગીતા સંદેશ (પ્રથમ અધ્યાય)	51
61	અર્જુનનો મોહ (પ્રથમ અધ્યાય)	52
62	ભગવદ ગીતા (દ્વતીય અધ્યાય)	53
63	સહેજે જે થાય એ સ્વીકાર	53
64	કોઈને ત્યાં ખાવું પીવું નહિં	54
65	If you are hurt, Please check it is your ego	55

વેદધર્મના પાયારૂપ ઉપનિષદ, બ્રહ્મસૂત્ર અને શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતા, એ પ્રસ્થાનત્રયી જેવા આર્યગ્રંથોમાં પ્રસ્તુત વૈદિકજ્ઞાનની રત્નકણિકાઓને શાબ્દિક સ્વરૂપમાં સાદી અને સરળ ભાષામાં લગભગ છેલ્લાં સાતેક વર્ષોથી ૨૦૧૬ થી દર શનિવારે સાંજે શિવમંડળી આદિપુરની ભજનસંધ્યા વખતે અવિરત પણે, નિયમિત રીતે માનનીય શ્રી હીરાલાલભાઈ નાવાણી સાહેબ તરફથી આજકા શુભસંદેશ પ્રસ્તુત થાય છે.

શનિવારની સાંજે એટલે આજકા શુભસંદેશ સાંભળવાની સૌ કોઈની આતુરતા હોય જ, અને તેમાં શ્રી નાવાણી સાહેબ તરફથી કંઈને કંઈ જ્ઞાનપ્રસાદી મળે. તેઓ આદીપુરથી અમદાવાદ રહેવા જતા રહ્યા એ પછી પણ સૌની વિનંતિથી તેમના શુભસંદેશ ઓડિયો મેસેજરૂપે શ્રવણનો લાભ અવિરત મળે છે.

શ્રી નાવાણી સાહેબ અનેક સંસ્થાઓમાં મોટી-મોટી જવાબદારીઓ સફળતાપૂર્વક નિભાવી રહ્યા છે છતાં ધર્મગ્રંથો પ્રત્યે તેમની અભિરૂચિને કારણે તેમનો જીવનમંત્ર - કર્મ એ જ ધર્મ અને ધર્મ એ જ કર્મ માં આધ્યાત્મિકતાનાં દર્શન થાય છે.

આ પુસ્તકમાં તેઓશ્રીએ દરેક શુભ સંદેશમાં માનવી માત્રના જીવનમાં કંઈકને કંઈક નવી પ્રેરણા જગાવી છે. તેમાંય શ્રીમદ્ ભાગવદ્ ગીતા, અધ્યાય-૧૬ માં ભગવાને વર્ણવેલી દૈવી સંપદાનુ જે વિવેચન પ્રસ્તુત કર્યું છે તે તો અદ્ભૂત છે. તેમાંથી થોડું-ઘણું પણ આપણા જીવનમાં અપનાવીશું તો આપણું જીવન ધન્ય બની જશે એ વાત નિશ્ચિત છે.

આવી બધી રત્નકણિકાઓનું વાંચન, મનન, ચિંતન અને નિદિધ્યાસનના પરિપકરૂપે તેનું પુસ્તકરૂપે પ્રકાશન કરી રહ્યા છે, એથી મોટો આનંદ આપણને માટે કયો હોઈ શકે ? તેમનો આ પ્રબળ પુરૂષાર્થ ખૂબ જ ધન્યવાદને પાત્ર છે. માત્ર માનનીય જ નહીં પણ સન્માનીય શ્રી હીરાલાલભાઈને અભિનંદન પાઠવું છું અને તેમની આ જ્ઞાનગંગા અવિરત વહેતી રહે તેવી શુભકામના પાઠવું છું.

તા. ૧૦-૦૨-૨૦૨૪
ડૉ. બી.એન.મહેતા,
રાજકોટ

प्रस्तावना

परमात्मा में से अलग हुआ उनका अंश इस पृथ्वी पर शरीर धारण करके मनुष्य रुपमें अवतार लेता है । मनुष्य (मानव) जन्म अवतार वह परमात्मा का प्रसाद है । इस मानव देह का सन्मार्ग, सत्यमार्ग एवं सेवा मार्ग में 'जन सेवा ही प्रभु सेवा है ।' इस सूत्र को सार्थक करते हुए उपयोग करना चाहिए । इस मनुष्य जन्म को सार्थक करने के लिए प्रभु भक्ति, भगवान में श्रद्धा, विश्वास, उपासना, व्रत, जप, तप, नियम तीर्थयात्रा एवं दान–पुण्य में जीवन का सद्उपयोग करना चाहिए । इस शुभ हेतु से कच्छ की भूमि पर संस्कारी एवं विद्यानगरी आदिपुर–गांधीधाम जैसे पवित्र शहर में जहाँ हमारे राष्ट्रपिता पू. महात्मा गांधीजी का समाधि स्थान है । इसके बाजु में श्री निर्वासितेश्वर महादेव के सानिध्य में ॐ शिवमण्डली सत्संग होल आया हुआ है । जहाँ वर्ष के ३६५ दिन दरिद्रनारायण को भोजन, स्कूल के बच्चों को नोटबुक एवं शैक्षणिक हेतु जरुरी चीज–वस्तुएँ, शहर की विधवा बहनों को हर मास अनाज वितरण, धार्मिक यात्राएँ, पवित्र श्रावण मास पर्यत श्री शिवमहापुराण कथा, श्रीमद् भागवत कथा, श्री राम चरित मानस कथा, श्री देवी महापुराण कथा एवम् श्रीमद् भागवद् गीता पर सत्संग कथा होती है । साथ में धार्मिक उत्सव भी मनायें जाते हैं । विशेष में शिवरात्री उत्सव, जन्माष्टमी उत्सव, श्री राम जन्मोत्सव एवम् नवरात्री उत्सव मनाया जाता हैं । हर शनिवार को सायंकाल में यहाँ सत्संग होता है ।

भगवान श्री कृष्ण अपने भक्त नारदजी को कहते है –

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वै ।
मभ्दक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।।

अर्थात् – हे नारदजी, मेरे भक्त जहाँ मेरे गुणगान करते है । भजन, किर्तन, सत्संग करते है वहाँ मैं स्वयं हाजिर होता हूँ । मैं वैकुंठ में नहीं रहता हूँ । न तो जहाँ योगी तप करते है । मैं तो केवल जहाँ मेरे भक्त मेरी स्तुति, सत्संग, सेवा करते हैं वहाँ मैं मेरे भक्त के साथ कथा श्रवण करता हूँ । मेरे भक्तों का खयाल रखता हूँ । भगवान श्री कृष्ण आगे कहते हैं की 'न मे भक्त प्रणश्यति ।' मेरे भक्त का विनाश नहीं होने देता हूँ । परब्रह्म, परमेश्वर को मिलना है एवं अनुभूति करना है तो इस कलिकाल में सत्संग ही श्रेष्ठ माध्यम है जो आदिपुर में ॐ शिवमण्डली सत्संग होल में होता है । भगवान शिवजी को अतिप्रिय श्रावण मास में व्यासपीठ पर से परम पूज्य श्री डॉ. बटुकराय महेता, परम पूज्य श्री

चंद्रकांत सूर्यप्रसाद शुक्लजी, प्रा. श्री भृगुऋषि विश्वनाथ व्यासजी श्री हरि–हर की कथाओं का गुणगान कराते है। इस शुभ भावनाओं के साथ वर्ष २०१६ से हमारे ॐ शिवमण्डली के चेरमेनश्री हीरालाल हरकिशनदास नावाणीजी द्वारा हररोज तीन घण्टे की कथा–सत्संग का सारांश पाँच मिनिट में हमारे शिव भक्तों के कथा के विराम होने के बाद अपनी दिव्य वाणी से देते है। ये परम्परा श्रावण मास एवम् हर शनिवार के सत्संग में आठ वर्ष से आज भी कार्यरत है। श्री हीरालाल हरकिशनदास नावाणीजी स्वयं हररोज शिवपूजन, गीताजी का अध्ययन एवम् दरिद्रनारायण मानव समूह की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

यह प्रभु परायण होने की अभिलाषा–अभीप्सा अपनी मातृश्री वैकुंठवासी स्व. श्रीमती रुकमणीबेन हरकिशनदास नावाणी से वारसागत प्राप्त हुई है। उनकी प्यारीसी माँ रुकमणी उनके साथ नित्य सत्संग करती थी। उनके सद्गुरु डॉ. योगेशभाई बुच थे। जिन्होंने आदर भाव के साथ अपने शिष्य को भक्तिमार्ग बताया। 'जन सेवा ही प्रभु सेवा है।' इस सूत्र को सार्थक करते हुए श्री हीरालाल हरकिशनदास नावाणीजी स्वयं व्यासपीठ पर बिराजते हुए लगातार चार सालसे अपने ईष्टदेव शिव का अपने हरिभक्तों के शिवकथा का गुणगान कराते है और अपने जीवन को धन्य बनाते है। सुमिरन–सत्संग को साथ सेवा के उदेश्य को चरितार्थ करने के लिए वह भक्तों का हृदयस्पर्शी शुभसंदेश देते है। इस शुभ संदेश का अब जनहितार्थ, लोक कल्याण हेतु संकलित करके पुस्तक रुप में बनाने का एक विचार उनके मन में भाव प्रगट् हुआ। इसके परिणाम रुप प्रथम पुष्प पुस्तिका रुप में भगवान श्री देवाधिदेव श्री निर्वाशितेश्वर महादेव के चरणों में श्री महाशिवरात्री महोत्सव २०२४ दिनांक : ०८/०३/२०२४, शुक्रवार के दिन अर्पण करते हुए आन्नद की अनुभूति प्रतीत हो रही है। भगवान सदा शिव उनको ज्ञान, भक्ति और कर्म करने की शक्ति प्रदान करे, ऐसी सभी शिवभक्तों की और से प्रभु को नम्र प्रार्थना, प्रणाम, वन्दन।

प्रभु परमात्मा शिवजी की सेवा में

प्रो. बी.वी. व्यास

M.Sc., M.Phil (Statistics)

Tolani Commerce College

Adipur (Kutch)

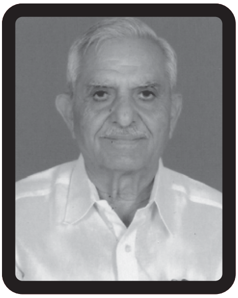

प्रेरणास्त्रोत

इस शुभसंदेश की प्रेरणा मेरे मित्र, मेरे फिलोसोफर एन्ड गाइड डो. श्री बटुकभाई महेता से मिली । महेता साहेब कथा करते थे और मुझे कथा के अंत में सार के दो शब्द बोलने को कहते थे । जिसको हम शुभसंदेश के रुप में पेश कर रहे हैं । यह शुभसंदेश २०१६ से चालु हुए फिर कथा के बाद भी हर शनिवार की भजन संध्या में भी शुभसंदेश सुनाने का आग्रह मेरे उपर हुआ । यह शुभसंदेश अभी ओडियो मेसेज के रुप में भी प्रस्तुत है । इसका पूरा श्रेय में मेरे गुरु समान डो. महेता को देता हू और यह पुस्तक मेरी पुत्री अंजली नावाणी/शेठी की स्मृति में आप सबके सामने रखता हु ।

इस शुभ प्रेरणादायक अवसर पर मैं अपनी माता स्वर्गीय श्रीमती रुकमणी एवं पिता स्वर्गीय श्री हरकिशनदास को चरण स्पर्श करते हुए आर्शीवाद ग्रहण करता हू । मेरे गुरुवर्य श्री योगेश बुचजी के चरणों में बैठकर उनसे आर्शीवाद ग्रहण करता हू । उनके दो मन्त्रो रुपी वाक्यों से ही मेरा जीवन सफल हो गया । साथ ही मैं परमपूज्य श्री चन्द्रकान्त शुक्ल, पुज्य डॉ. बटुक मेहता (प्रखर कथाकार भागवद एवं शिव पुराण), वंदनीय प्रो. भृगुऋषि व्यासजी के भी चरण स्पर्श करते हुए हृदयपूर्वक वंदन करता हू । मेरे साथी श्री पुरुषोत्तम राजाणी सेक्रेटरी और ॐ शिवमण्डली के समस्त सदस्य, मित्रो का वन्दन सह आभार प्रकट करता हू । जिन्होने मुझे हर कार्य में सहयोग दिया है । मैं अपने भाई एवं ॐ शिवमण्डली के ट्रस्टी श्री नारायण नावाणी को कैसे भूल सकता हू जिन्होने मेरे कन्धे से कन्धे मिलाकर १९७८ से ॐ शिवमण्डली के भगीरथ कार्य को हंमेशा आगे बढ़ाने में हृदयपूर्वक सहयोग दिया है । मेरी पत्नी नीता नावाणी एवं समस्त परिवार का भी धन्यवाद ।

ॐ नमः शिवाय शिव सदा सहाय ।

सबको प्रणाम वदंन – जय शंकर

प्रभु परमात्मा शिव भोले के चरणों में अर्पित,

हीरालाल नावाणी

चेयरमेन ॐ शिवमण्डली – आदिपुर

कच्छ–गुजरात

मो. ९७२६१७१५०४

1. ऐसी सुबह ना आए (भजन)

ऐसी सुबह ना आए, आए ना ऐसी शाम,
जिस दिन जुबाँ पे मेरी, आए ना शिव का नाम । ॐ नमः शिवाय ।
मन मंदिर में वास है तेरा, तेरी छवि बसाई,
प्यासी आत्मा बनके जोगन, तेरी शरण में आई ।
तेरे ही चरणो में पाया, मैंने ये विश्राम,
ऐसी सुबह ना आए, आए ना ऐसी शाम । ॐ नमः शिवाय ।
तेरी खोज में न जाने, कितने युग मेरे बीते,
अंत में काम क्रोध मद हारे, हे भोले तुम जीते ।
मुक्त किया तूने प्रभु मुझको, शत शत है प्रणाम,
ऐसी सुबह ना आए, आए ना ऐसी शाम । ॐ नमः शिवाय ।
सर्व कला सम्पन तुम्ही हो, हे मेरे परमेश्वर,
दर्शन देकर धन्य करो अब, हे त्रिनेत्र महेश्वर ।
भव सागर से तर जाउंगा, लेकर तेरा नाम,
ऐसी सुबह ना आए, आए ना ऐसी शाम । ॐ नमः शिवाय ।

* * *

2. जय शंकर भोले (भजन)

जय शिव शंकर जय शिव शंकर
जय शंकर भोले
सब देवों मे देव निराले जय बम बम भोले
महादेव तूने ही तो, सब देवों का संताप हरा,
सागर मंथन में निकाला विष, तूने अपने कंठ धरा ।
इसलिए हर प्राणी तुझको, नील कंठ बोले,
सब देवों में देव निराले, जय बम बम बोले ।
जय शिव शंकर शिव शंकर, जय शंकर भोले ।
सब देवों में देव निराले, जय बम बम बोले ।
तेरे नाम अनेको बाबा, तेरी महिमा न्यारी,

तेरे भेद अनोखे सबसे, क्या जाने संसारी ।
तूही है कैलाशपति, तू पर्वत पर डोले,
सब देवों मे देव निराले, जय बम बम बोले ।
शीश तुम्हारे गंगा मैया, चन्द्र शिखर पे सोहे,
तन पे सर्प विचरते रहते, भक्तो का मन मोहे ।
उनको कैसा कष्ट जगत में, नाम तेरा जो लेवें,
सब देवों में देव निराले, जय बम बम बोले । जय शिव शंकर...

* * *

3. छोडने में मजा है

हमारा हाथ इलेक्ट्रीक करन्ट वाली वायर से जुडा है करन्ट लग रही है – हाथ छुटता नहीं, हाथ छुडाने की कोशीश भी करते है परन्तु वायर हाथ से चिपक गया है छुटता नहीं है । जब हम चिल्लाते हैं तो कोई मदद के लिए आता है लकड़ी मारता है या हाथ पर या वायर पर तब हम छुट जाते हैं तब बड़ा सुकून मिलता है, आराम मिलता है ।

यह दुनिया है, उसकी माया है – करन्ट रुपी माया है हमारा हाथ उसमें चिपक जाता है । तब हम छुटने के लिये सच्चे दिल से किसी को पुकारते है कोई सदगुरु आता है हमें माया से छुडाता है लकड़ी रुपी उपदेश के माध्यम से हमें मोह से अलग करवाता है । तब हम इस मोह माया से छुटते है हमें बड़ा सुकुन मिलता है और दिल–दिमाग को आराम मिलता है ।

छोड़ने में मजा है । छोड नावाणीभाई छोड क्यों पकड कर बैठा है पकड़ने में मजा नहीं है । छोडने में मजा है । शादी की पार्टी में जाते हैं तरह–तरह के पकवान तरह–तरह के स्नेकस, मिठाइयां, जी ललचाता है सब खाऊं । ये भी टेस्ट करुं वो भी टेस्ट करुं हलवा, रबडी, जलेबी, आईस्क्रीम भी मौजूद है । सब लेते हैं ठंडा वेलकम ज्यूस भी, गरम सूप भी, सब चाहिए परन्तु पेट की हालत क्या होगी वो दूसरे दिन ही मालुम होगा ।

खाने में मजा है परन्तु छोडने में ज्यादा मजा है । छोडते जाओ छोडते जाओ अन्त में छोडने में ही मजा है । धर का मुखिया बनना है सब जवाबदारी मेरी है किसी को जवाबदारी सोंपी नहीं है । बहु को, बेटे को, छोटे भाई को सब कुछ खुद करने की इच्छा । दूसरे को दूगां तो गडबडी कर देगा गलत कर देगा । उसी तरह ओफिस में, विश्वास रखो

दूसरे को काम सोंपो । छोडने में मजा है सब पकडने में मजा नहीं है । पकडो, एक ही को पकडो, एक प्रभु को एक मेरे मालिक को, एक शंभु भोले को उसको, एक को ही पकडो । सब का मालिक एक ही है । उस पर भरोसा रखो उस पर विश्वास रखो । बाकी सब छोडने में मजा है ।

* * *

4. परमात्मा के अच्छे बच्चे बनें

जैसे कलास में टीचर अच्छे बच्चे को प्यार करती है और मोनीटर बनाती है । एक सुहागन स्त्री अपने पति के लिये श्रृगांर करती है और अच्छा बनके अपने पति को प्रिय लगने का प्रयत्न करती है । हम भी एसे श्रृंगार करें कि अपने परमात्मा को पसन्द आ जायें । स्वच्छ रहें, र्निलोभी रहें, पर सेवा करे, प्राणी मात्र को प्यार करें, उसकी सेवा करें ऐसे गुण खुद में एक-एक करके बढाते जाये, वो हमारे गहने हैं । ऐसे इन्सान प्रभु को प्यारे लगते हैं । प्रभु के अच्छे बच्चे बने और उसे पसन्द आ जायें ।

* * *

5. भगवद गीता श्लोक (2.38)

सुखदु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।।२.३८।। (भगवद् गीता)

सुख दु:ख को समान तुल्य समझकर अर्थात उनमें रागद्वेष न करके तथा लाभहानिको और जयपराजय को समान समझकर उसके बाद तू युद्ध के लिये चेष्टा कर इस तरह युद्ध करता हुआ तू पाप को प्राप्त नहीं होगा । तात्पर्य : कहने का मतलब है कि स्वयं का कर्तव्य करने के लिए स्वार्थ को एक तरफ छोडकर लाभहानि की चिन्ता किए बिना जो कार्य किया जाता है उसमें कोई बन्धन नहीं होता । उसमें कोई पाप नहीं लगता । सिर्फ कर्तव्य पूरा करने के लिये किया गया है तो ऐसा समझा जाता है कि सच्चे मन से प्रयत्न किया गया है । सच्चे मन से किया गया कर्तव्य प्रभु के दरबार में स्वीकार होता है ।

जब हम अपने स्वार्थ को अपने अहम को या मोह को एक तरफ छोडकर कोई भी कार्य करते है तो वो कार्य नि:सन्देह अच्छा कार्य ही होता है, परिणाम चाहे जो भी हो उसमें पाप नहीं लगता । एक विद्यार्थी साल भर मेहनत करके परिक्षा में प्रवेश करता है तो

परिणाम चाहे जो भी हो सफल या असफल अच्छे नम्बर या कम नम्बर किन्तु जो जानते है कि इस बेचारे ने महामहेनत करके परिक्षा दी है तो पेपर कठिन होने के कारण मार्कस कम आये हैं । वो एक बात अलग है अगर अच्छे मार्कस आते है तो भी ऐसा कहा जायेगा कि विद्यार्थी की कडी महेनत का फल है ।

दोनों स्थितियों में उसे दोष नहीं लगता । अर्जुन की भी वही परिस्थिति है । अध्याय–२ श्लोक–१ से ३८ तक भगवान अर्जुन को अलग अलग तर्क देकर युद्ध करने की प्रेरणा देते है । कहने का तात्पर्य यह है कि अर्जुन का युद्ध न करने का कारण था –

– सगे, सम्बन्धि, पूज्य लोग जैसे भीष्म पितामह और द्रोणाचार्यजी को कैसे मार सकता है ?
– युद्ध से कुल का नाश होगा, कुछ बचेगा ही नहीं तो फिर किस के लिये युद्ध करें ?
– अपने कुल का नाश करने से बेहतर है कि भिक्षा मांगकर जीवन निर्वाह करना । एक प्रकार से देखा जाय तो अर्जुन के तर्क में दम है किन्तु वस्तु को परिस्थिति वश देखा जाय तो भगवान उसे समझाते है कि –
– तूं कुन्ती पुत्र है तेरी मां को मालुम है कि मैं यह कुल का नाम बचाने के लिये सन्धि का प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास गया था और पांच पांडव के लिए सिर्फ पांच गांव मांगे थे ताकी युद्ध को टाला जा सके परन्तु दुर्योधन ने पांच गांव तो दूर, सुई की नोंक भर जमींन भी नहीं दुंगा, ऐसा कहकर सन्धि का प्रस्ताव ठुकरा दिया और हमें युद्ध के कगार पर खडा कर दिया ।
– भीष्म, द्रोण और अन्य पूजनीयों को मारना पाप है परन्तु वे लोग शरीर है ही नहीं आत्मा है । आत्मा अमर है । शरीर तो वैसे भी खत्म होने वाला है । युद्ध करने से कुल का नाश होने पर पाप लगेगा तो भगवान कहते है कि युद्ध न करने से भगोडे कहलाओगे और ज्यादा पाप लगेगा अपना कर्तव्य कर्म करनें में पाप नहीं लगता ।
– इसलिये समभाव होकर, लाभ हानि, जय पराजय को एक तरफ रखकर, अभी युद्ध भूमि में क्षत्रीय को जो अच्छा लगे, अपना कर्तव्य कर्म कर, उसमें ही तुम्हारा कल्याण होगा । इस तरह भगवान कृष्ण स्पष्ट है और परिस्थिति वश सन्देह का समाधान दिया है कि स्वार्थ, लोभ, लाभ, हानि को छोडकर कर्तव्य कर्म करो उसका पाप नहीं लगेगा अपितु वह धर्म ही होगा ।

* * *

6. अहंकार–अभिमान

हर एक इन्सान में अहंकार होता है वो ये बताने की कोशीश करता है काम मैंने किया। मैंने इतना बडा काम किया। मैंने पथ्थर तोडा, मैं आकाश में उड गया, मैं पहाड पर चढ गया हर बात में मैं। वास्तव में मैं मैं मैं कोन करता है बकरा। दक्ष प्रजापति ने इतना बडा काम किया बहुत बडा यज्ञ किया ब्रह्मा, विष्णु सभी देवी–देवताओं को बुलाया किन्तु मैं मैं उसमें बहुत थी। भगवान शिव उसके जमाई थे। उमा उसकी बेटी थी। मैं इतना बडा यज्ञ कर सकता हुं। मैं महान हुं इसलिए मैं शिव शंकर की क्यों सुनु। मेरा दामाद होते हुए भी मुझे मान सन्मान नहीं देता।

इसी मैं मैं के कारण दक्ष के यज्ञ का विधवंश हुआ और उसकी खुद की बेटी उमा, जो यज्ञ में जल कर सती हो गई। बदले में दक्ष का शिर कट गया और शिव भगवान ने उसे बकरे का शिर लगाकर वापस जिन्दा कर दिया। बकरा मैं मैं का प्रतीक है ये दक्ष प्रजापति को महसूस कराता था कि जो मैं मैं करता है वह बकरे से कम नहीं है। हम चाहे कितना भी बडा यज्ञ करें, कितना भी बडा प्रसंग करे या सुन्दर कांड का पाठ रखें या कितना भी सुन्दर आयोजन करें। बडे से बडे आयोजन में कुछ न कुछ त्रुटि रह जाती है। इसी लिए आदमी प्रसंग सम्पन्न होने पर सबसे माफी मांगता है और कार्य में आयोजन में किसी को भी कोई तकलीफ हुई हो तो माफी मांगता हूं। मेरी जरुर भूल हुई होगी, भाई समझकर, बेटा समझकर माफ कर देना। वो लोग उसकी बात करते है कहते है कि देखो कितना नम्र आदमी है और बोलते है कि परवा/फीक्र मत करो, छोटी–छोटी बाते है सबसे होती है। उसके आयोजन की प्रशंसा करते है।

दूसरे आदमी कार्य सम्पन्न होने पर मैंने इतना सुन्दर बन्दोबस्त किया। इतना बडा प्रसाद का आयोजन किया। मैं मैं मैं करता रहता है तो लोग भी उसके बन्दोबस्त में से उसके आयोजन में से बहुत सारी गलतियां निकालते है और उससे नाराज रहते है। मैं मैं बोलने वालों की जीत नहीं होती जीत होती है नम्र आदमी की। हम यज्ञ में आहुती देते हैं :

ओम भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
इदम् गायत्री, इदं न मम।

ये जो आहुती है वो गायत्री के लिये है उसमें मेरा कुछ नहीं। आजकल न सिर्फ मैं मैं है परन्तु इगो बहुत है। पति–पत्नि के बीच मैं मैं है, इगो है। अकेले रहते है केरेयर के

लिए, नोकरी के लिए, मा–बाप का भी साथ नहीं है फीर भी इगो है । आदिपुर–अहमदाबाद मैं बैठे बैठे रीमोट कन्ट्रोल से, मा–बाप भी फोन से अपने बच्चों को चढाते हैं और मैं मैं मैं बच्चों की जिन्दगी खराब होती है । इसलिए हम जो कुछ करते है वो हमारे लिये नहीं है परन्तु भगवान के लिये है । ऐसा मानने वालों की जीत होती है ।

7. अच्छी बहु

हर किसी को अच्छी बहु चाहिये । सामने वाला अच्छा चाहिए तो हमें भी अच्छा होना पडेगा ।

– हमें अपना बर्थडे याद होता है अपनी मेरेज अेनिवर्सरी याद रहती है हम चाहते हैं कि लोग याद करके हमें विश करे लेकिन हमें दूसरों के जन्मदिन और शादी की शालगीरा याद करनी पडेगी, याद रखनी पडेगी । उसी तरह अपनी बहु का मंगनी दिन, शादी का दिन, जन्मदिन याद करके उसे मुबारक बाद दे और प्यार भी करें ।
– अपनी बहु को एक–एक कर त्यौहारो पर, कपड़े गहने आदि ले के दे । बाहर घुमकर आए तो उसके लिये कुछ लेके आए । अपने बेटे को कुछ दे तो अपनी बहु को भी कुछ लेकर दे । बाहर घुमाके आए, पीकचर देखकर आए इस प्रकार से बहु का मन खुश और हमारा मान बढेगा । घर में औरतो को इज्जत दे । मा, बहन सभी को इज्जत दें ।
– अभी हम बुजुर्ग हो गये है सिर्फ पुरुष ही नहीं थकता, स्त्री भी घर का काम करके थक जाती है । हमें अपनी पत्नी की सेहत का ध्यान रखना चाहिए । बात बात में टोकना नहीं चाहिये ।
– यह जरुरी नहीं की सिर्फ पत्नी ही पति को चाय बनाके दे पर पति भी पत्नी के लिये चाय बना कर दे तो दोनो को सम्मान व इज्जत मिलेगी । दोनों को खुशी मिलेगी । मैं तो कहता हुं की बहु को भी कभी चाय बनाकर दो तो कितनी खुशी होगी ।
– आप वोटसअेप पे पढे कि बुढे मा–बाप की सेवा के लिये अच्छे बेटे की जरुरत है ही बल्कि अच्छी बहु की भी जरुरत है । अच्छी बहु मिलेगी । अच्छी बहु ऐसे ही पैंदा नहीं होती, किन्तु प्यार का वातावरण उसके पति, सास, ससुर बहु को प्यार देंगे बहु की इज्जत करेंगे तो निश्चित ही बहु अच्छी न भी होगी तो अच्छी हो जायेगी । बहु से प्यार करें यह ही आज का संदेश है ।

8. अति का भला न बोलना
अति की भलि न चुप, बच्चों में संस्कार

किसी भी चीज की अति हमेशा नुकशान करती है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम से किसी ने पूछा की What is poission ? जहर क्या हैं ? उन्होंने जवाब दिया की हर चीज का अति पोइजन है, जहर है। गुलाब जाबुन खाने में अच्छे लगते है किन्तु अपनी केपेसिटी से ज्यादा खाने पर बदहजमी होगी। बीमारी होगी इस तरह किसी भी चीज का एकसेस/अति अच्छा नहीं। ऐसा होगा हमें समोसा अच्छे लगते है। २–४–६ खाने के बाद पेट भर जायेगा। खाने में बहोत टेस्ट आये, मजा आये एक अच्छा और भी खा लिया परन्तु अब एक भी समोसा पेट मे चलेगा नहीं। जब दोस्त या भाई खिलायेगा तो समोसा हमें जहर जैसा लगेगा। कुछ लोग देखिये सारा दिन बोलते रहते है परन्तु हम उसे कुछ बोल नहीं सकते हैं। मन मैं आता है कि ये कब बंद करेगा।

अगर हम उसके दोस्त है तो बोल भी देगें की अब चुप भी करेगा, कब से गटर–गटर किये जा रहा है। दूसरे एक व्यक्ति है सारा समय चुप बैठा है मित्रो की गोष्ठी है हंसी मजाक चलती रहती है परन्तु वह है कि चुप चुप बैठा है तो उसे बोलना पडता है की भई कुछ तो बोल। सारा समय जब से आया है तब से चुप बैठा है अच्छा नहीं लगता हमसे नाराज है क्या ? एसे अति का भला न बोलना अति की भली न चुप। गृहस्थ है तो घर के सब काम समय से करने पडते है। एक गृहिणी अपने बच्चों का ध्यान रखती है। पति का, सास–ससुर का फिर भी समय निकालकर पूजा पाठ कर लेती है, व्रत कर लेती है, अच्छी लगती है किन्तु वही स्त्री अगर सारा दिन पूजा पाठ करती रहे तो हालाकि भगवान का नाम लेना अच्छा है। सेवा करना अच्छा है किन्तु अति होने पर सब उससे नाराज होंगे।

* * *

9. भगवद गीता अध्याय–3

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ।।३.२७।।

वास्तव में सम्पूर्ण कर्म सब प्रकार से प्रकृति के गुणों द्वारा किए जाते हैं, तो भी जिसका अन्त:करण अहंकार से मोहित हो रहा है, ऐसा अज्ञानी मैं कर्ता हूं ऐसा मानता है।

अब सौंप दिया है इस जीवन को भगवान तुम्हारे हाथों में ।
हम जब तकलीफ में होते हैं तो भगवान याद आते हैं ।।
दु:ख में सब स्मरण करें सुख में करें न कोई ।
जो सुख में स्मरण करें तो दु:ख काहे को होय ।।

हम हमारा सर्वस्व प्रभु को सौंप दे तो कैसा लगेगा । दु:ख भी तुम्हारा सुख भी तुम्हारा । यश भी तुम्हारा अपयश भी तुम्हारा । मान–अपमान सब समान । ओटोरिक्षा, ट्रेन, प्लेन में हम अपने आपको ड्राइवर के हवाले सोंप देते है । डरते नहीं की गिराएगा, मारेगा कभी नहीं पूछते । नया ड्राइवर होता है तो पूछते है भैया अच्छी तरह चलाएगा गिरवाएगा तो नहीं ? भगवान से बढकर कोई अच्छा ड्राईवर होगा क्या ?

केवट ने भी प्रभु को कहा था, इस बार मैने आपको नाव से पार लगाया है, संसार सागर से आप हमें पार लगाना । जीवन में देखें तो मालुम होगा कि हम अपने उपर रखते है कभी काम बनता है कभी बिगडता है किन्तु प्रभु को सोंप देने से सब बिगडे हुए काम भी बन जाते है । अमुल्य सांस दिये है प्रभु ने एक–एक सांस की किंमत है । हर सांस में प्रभु का स्मरण करें ।

* * *

10. क्रोध

झुठ बोला तो भी क्रोध । क्या मैं ही झुठ बोलता हुं तुम नहीं बोलते और कितने लोग बोलते हैं ? ऐसा करके क्रोध करतें हैं हम । झुठ नहीं बोला तो भी क्रोध मैने झुठ बोला ही नहीं, तुम मुझे ही बदनाम करने पर तुले हो । मैं खोटा आरोप नहीं सहता । तो गुस्सा नहीं करता तो क्या करता ? झुठ नहीं बोला तो मैंने झुठ नहीं बोला लोगो को जो समझना है समझे मैं क्यों गुस्सा करुं ।

गुस्सा क्यों आता है ? इगो हर्ट । मेरी इज्जत, मेरी मर्यादा उपर धक्का लगता है मेरे स्टेटस पर असर होता है । मैं बडा नेता हूं कोई मुझे प्रथम पंक्ति पर, मंच पर नहीं बैठाये तो मेरा मान सन्मान नहीं करे तो मैं उठके चला जाउंगा । बहुत थोडे लोग होते जो Down to earth (नम्र स्वभाव) होते है । बहुत बडे पैसे वाले फेकट्री के मालिक भी जरा सा भी धमन्ड अभिमान नहीं करते ऐसे लोगो को गुस्सा कम आता है । बडे–बडे ज्ञानी पंडित कथाकार शहरमें बडा नाम फिर भी बिना धमंड, बिना आडंबर सब से प्रेम का वर्ताव करते है ऐसे लोगो को क्रोध कम आता है ।

11. काम वासना पूरी न होने पर स्वयं के काम न होने पर क्रोध आता है

घर पर पति महोदय आये ८:३० बजे खाना तैयार चाहिये दोस्तो के साथ ९.३० वाले शो में जाना है। अच्छा अभी तो कुकर की सीटीयां बज रही है। एकदम गुस्सा, क्रोध पत्नि को जैसा–तैसा बोलना शुरु। दोनों का क्रोध, दोनों का जगडा शुरु। पिकचर भुल कर घर में मारा मारी। इसके विरुद्ध ऐसे भी लोग है एकदम पूछते, कह देंगे क्यों भला मैने बोला तो था मुझे जाना है। तबीयत तो ठीक है ना। ठीक है अभी मुझे दिन का बचा हुआ ही दे दे। नो प्रोबलम। कोई परवाह नहीं। दिन का बचा हुआ भी नहीं है तो दोस्तो को जाने को कहता हुं, मैं १० मिनिट लेट पहचुंगा क्या फरक पडता है। थोडी पिकचर निकल जायेगी। इससे पत्नी भी चेन से रहेगी और सोरी बोलके खुशी खुशी जल्दी जल्दी खाना परोसेगी। पति को दोस्तो के सामने नीचा न दिखना पडे।

कभी कभी क्रोध की पराकाष्टा हो जाती है लोग जरा सी गाडी टकराने पर एक दूसरे पर इतना गुस्सा करते है की बहुत बार आपने न्यूज पेपर में पढा होगा जरा सी बात पर खून हो गया, मर्डर हो गया। स्वयं पर काबु रखने, स्वयं को कन्ट्रोल करने में ही मजा है।

* * *

12. गुस्सा

एक सत्य घटना है। ब्रिटनमें, जर्मनी में एक साईन्टीस था वो कितने समय से खोज करके पेपर्स तैयार करता था। रात दिन अपनी रिसर्च में लगा रहता था उसे विश्वास था कि सफलता मिलेगी। उसका नाम होगा और पैसा भी खूब म्लिगा। परन्तु अभी तंगी थी घर में जरुरी चीजों का अभाव था पत्नि तंग आ चूकी थी। हालाकि उसे मालुम था कि एक दिन पति को सफलता मिलेगी परन्तु फिर भी अभाव की वजह से वह पति को खरा खोटा सुनाती। एक दिन तो हद कर दी उसने कहा आज में तेरे रिसर्च से तंग आ चूकी हूं। दोनों में तू तू मै मै हो गई। पत्नी ने सारे रिसर्च पेपर आग में डाल दिये।

अब सोचो उस साइन्टीस की क्या हालत होगी। उसकी महेनत यूं आग में डाल दी गई। उसको भी गुस्सा आया बहुत बडा पथ्थर आंगन में पड़ा था और सीधा पत्नि के उपर, पत्नि का खून। किन्तु नहीं दो मिनिट में उसे विचार आया कि मेरे पेपर्स तो आग में

जल गये । अब उसका खून करने से मुझे क्या मिलेगा पथ्थर फेंक दिया । दो मिनिट के संयम से दो मिनिट मगज को शान्ति देने से बहुत बडा अनर्थ रोका जा सकता है । लोग तो गोली चला देते है फिर जीवन भर भुगतते है । क्रोध को शान्त करने के लिये सिर्फ २ मिनिट की जरुरत होती है । २ मिनिट ब्रेक ।

एक स्त्री थी उसका पति शराब पीकर घर पर आता । वह उसे बहुत भला बुरा कहती । दरवाजा नहीं खोलती, खाना नहीं देती विगेरे । फिर पति भी पत्नि को मारता ये सिलसीला बहुत लम्बे समय से चल रहा था । एक सन्त आया वह स्त्री उस सन्त के पास गई सन्त से पति को शान्त करने का नुस्खा (तरीका) पूछा । सन्त ने एक पानी की बोतल दी । बोतल का क्या करु ? बोले पति कुछ बोले तो बोतल मुह में डाल के रखो । कुछ बोलो नहीं । पत्नि के बोलने से पति को गुस्सा आता और वो मार पीट पर उतर आता । किन्तु पत्नि अगर कुछ जवाब नहीं दे और शान्त रहे तो पति का गुस्सा बढेगा ही नहीं ।

* * *

13. सेवा

''सत्संग स्मरण सेवा'' ये हमारी ओमशिव मन्डली का स्लोगन है, नारा है । सत्संग में आते है, स्मरण भी करते है और सेवा भी करनी चाहिये । एक घडी, आधी घडी आघी पे पनी आध, सेवा संगत साधु की, हरे कोटि अपराध । थोडी सी की हुई सेवा भी हमारे करोडो अपराधो, गुनाहो को गलतियों का नाश कर देती है । पूजय मोरारी बापुने भी कहा कि जीवन में एक व्रत लो । कोई भी सेवा । पानी पिलाने की, जूतो की सेवा, खाना परोसने की सेवा, झाडू की सेवा, सफाई की सेवा । कोई भी एक सेवा जीवन में जरुर करो और कितने लोग अन्न वितरण की सेवा करते हैं कितने टिफिन की सेवा करते है, कितने स्कूल फीस की और कितने युनिफोर्म की । एक सेवा का व्रत जीवन में जरुर लें ।

* * *

14. गीता में कर्मयोग सिद्धांत

श्री कृष्ण भगवान ने कहा है तृतीय अध्याय में कर्मयोग क्या है ? जीवन जीने का ढंग, सेवा द्वारा । कर्तव्य कर्म सेवा का, भगवान कहते है कि बिना सेवा के यह सृष्टि चल ही नहीं सकती । यह सेवा का योग भगवान ने सूर्य से कहा । सूर्य ने मनु से, मनु ने इश्वाकु से

और इस तरह यह सेवा का योग कर्तव्य कर्म योग राजऋषियों ने जाना। सूर्य को भगवान ने कर्म योग का पाठ पढाया। सूर्य हम सबकी सेवा करता है। नित्य ठीक समय पर उठता है। रोशनी देता है प्रकाश देता है गर्मी देता है। पूरी सृष्टि का संचालन करता है। यह वनस्पति ये पेड पौधे, पूरी दुनिया सूर्य के सेवा के कारण चल रही है।

यहा तक की सूर्य पानी सुखाता है, वो भी बादल बनके उनका भाप बनाके पानी बरसा देता है सूर्य सेवा करता है। हम भी अपने जीवन में एक सेवा का व्रत लें लें। पानी पिलाना, शरबत पिलाना, कथा में सेवा करे, सतगुरु की सेवा करे, इस मदिर प्रांगण की सफाई में योगदान दे। खुद के हाथों से की हुई सेवा का अनेक गुना फल मिलता है। सेवा सत्संग में बडे–बडे लोग अपने हाथों से सेवा करते है। गुरुद्वारा में जुता रखने, प्रसाद बांटने, खाना बनाना अनेक सेवा लोग करते हैं। सफाई की सेवा या जो भी सेवा हाथ में आये, हम कर सकते है।

* * *

15. मेरे प्रभु को जो अच्छा लगे

'राम राखे तेम रहीअे' जैसे प्रभु रखें प्रभु की इच्छा। मेरे प्रभु को मेरे मालिक को क्या अच्छा लगता है ? मैं वो ही करुंगा जो मेरे इष्ट देव को, मेरे कृष्ण को, मेरे शिव को, महादेव को, मेरे राम को अच्छा लगेगा। हर काम के पहले दो मिनिट विचार करें। क्या ये मेरे प्रभु को अच्छा लगेगा। उसे क्या पसंद है ? मैं वो ही करुं। सुबह जल्दी उठना भगवान को पसन्द है और क्या पसन्द है ? घर के काम सब समयसर करें।

सुबह को उठकर मालिक के सामने बैठे हे मेरे मालिक हे, मेरे प्रभु, आपने मेरी अच्छी रात बिताई उसके लिये धन्यवाद अब दिन भी मेरा अच्छा गुजारना। दो मिनिट आंखे बंद करके भगवान से पूछे आज मैं क्या करुं ? आपको जो अच्छा लगता हो वही काम करुं। स्वयं ही उत्तर मिलेगा, ये ये करो। बस उसकी पसन्द के काम करते जाओ। जिन्दगी संवर जायेगी जिन्दगी में फुल खिल जायेंगे। सारे दिन में करने को बहुत सारे काम है परन्तु आज मैं वो ही करुंगा जो प्रभु तुझे पसन्द है।

तेरी पसन्द का नास्ता करुंगा। तेरी पसन्द का खाना खाउंगा। तेरी पसन्द के लोगो से दोस्ती रखुंगा। तेरी पसन्द के गाने गाऊंगा। तेरी पसन्द की पिक्चर देखुंगा तुझे पिकचर पसन्द नहीं, मैं नहीं देखूंगा। हर बात में प्रभु को सामने पाओ। उसकी पसंद पूछो

। बस तुझे गुस्सा पसन्द नहीं है गुस्सा नहीं करुंगा । तुम्हे झुठ पसन्द नहीं है, मैं झुठ नहीं बोलुंगा । तुझे मीठे शब्द पसन्द हैं, मैं सबसे मीठी भाषा में बोलूंगा । मृदु भाषा में व्यवहार करुंगा । हे मेरे मालिक बताओ, तुमे क्या पसन्द है ? ऐसा करते करते रात हो जाएगी ।

रात को सोने से पहले प्रभु के पास जाके बेठो । आज का दिन बडा अच्छा गया, प्रभु धन्यवाद । हे मेरे मालिक मैंने सब कुछ आपकी पसन्द के काम किये । दिन अच्छा गुजर गया । अब रात भी अच्छी करना । अच्छी नींद में सुलाना, अमृत वेले में उठाना । अपना नाम याद कराना । इस तरह की जिन्दगी स्वर्गमय, सुखमें, जिन्दगी गुजर जायेगी । एक एक पल एकएक दिन बेहतरीन गुजर जायेगा ।

* * *

16. गुरु पूर्णीमा

गुरु पूर्णीमा अषाढ महिने के अन्त में पूर्णीमा को आती है । यह पूर्णीमा गुरु को समर्पित की जाती है । इस दिन गुरु वेद व्यासजी का जन्मदिन है । पहिले पहिले नैमिशारण्य में सनकादिकजी ने गुरु वेद व्यास को कहा कि मैने इतनी पूजा अर्चना साधना की है, फिर भी मुझे भगवान के दर्शन नहीं हुए । तो गुरु वेद व्यासजी ने उनको भगवान का दर्शन करवाया और सनकादिकजी ने उन्हे गुरु के रुप में पूजा । वो पूर्णीमा अषाढ का दिन था ।

तब से ये माना गया कि गुरु चन्द्रमा की तरह है, शिष्य अषाढ के काले बादल की तरह है । गुरु सूर्य का तेज भगवान से लेकर उसे ठण्डा करके चन्द्रमां के रुप में काले बादलरुपी अज्ञानी शिष्यों को, ज्ञानरुपी शितल प्रकाश देता है । यह अषाढ़ मास में ही काले बादल होते है और चन्द्रमा रुपी गुरु पूर्णीमा के दिन हमें सूर्यरुपी भगवान का प्रकाश देते है । गुरु की महिमा अपरंमपार है ।

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वर ।
गुरु साक्षात् परम्ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।
पूजा मूलम् गुरुरु पदम् ।
मन्त्र मूलम् गुरुरु वाक्य ।
मोक्ष मूलम् गुरुरु कृपा ।

गुरु के ज्ञान के केवल दो शब्द काफी है उनपे चले । मैंने अपने गुरु के दो वाक्यों पर अपना जीवन चलाया और धन्य हो गया जैसे दादा जशन वासवाणी, साधु वासवाणी

(बडे दादा) कहते है वैसे ही मेरे गुरु भी कहते थे गिव एन्ड टेक । पहिले देना सीखो । लव एन्ड गीव । प्यार करो और दो । देना देना । बस एक शब्द से आपका हो गया बेडा पार । दादा जशन वास्वाणी कहते है फोरगीव अेन्ड फोरगेट, भुल जाओ और माफ करो । इस एक शब्द को ले लो जीवन का बेडा पार हो जायेगा ।

* * *

17. दीना बन्धु दीना नाथ, मेरी डोरी तेरे हाथ

प्रभु पे भरोसा रखें वो जो करता है सही करता है, उसकी मर्जी के बीच में न आए, दखल न दें, नाराज न होवें । सहेज जो हो रहा है उसे स्वीकार करें । हम अपने मनसुबे बनाते है परन्तु प्रभु की क्या मर्जी । खबर नहीं है, हमैं पता नहीं । इसीलिये परिस्थिति जो हो, बोलो दीना बन्धु दीना नाथ मेरी डोरी तेरे हाथ । प्रभु मालिक जो कुछ भी करतें है अच्छा करते हैं हमारे भले के लिये करतें है सिर्फ विश्वास रखें । मालिक पर भरोसा रखें ।

मेरा थराद से बदली का किस्सा सच्चा किस्सा बिना कुसुर के चीफ इन्जीनीयरने बदली कर दी बहुत गुस्सा और दुःख भी आया । एस.ई को बोला, पर वह कुछ न बोले । एक एन्जीनीयर ज्योतिष विद्या के ज्ञाता थे । बोला आपकी तबादला (ट्रान्सफर) लीखा हुआ है । कच्छ में तबादला होगा । बदली हुई कच्छ के बदले भाभर में गुस्सा आ रहा था गुरुजी को आके बताया । बोले साहेब, जो हो रहा है वो स्वीकार करों । चार महीने मे भाभर से कच्छ में बदली हुई । यह १९८८ की बात है तब मैं ४० साल का था गुरुजीने कहा प्रभु जो कुछ करते है अच्छे के लिये करते है । दीना बन्धु दीना नाथ मेरी डोरी तेरे हाथ । स्वीकार करें हम तुरन्त दुःखी हो जाते है जरुरत है सतसंग की, गुरुजी की, अच्छे साथीयों की, महेता साहब जैसे गाइड की । दीना बन्धु दीना नाथ मेरी डोरी तेरे हाथ । कोलेज पढते थे, आरती के बाद गाते थे । दीना बन्धु दीना नाथ मेरी डोरी तेरे हाथ परन्तु सही मतलम आज जाकर मालुम हुआ है ।

* * *

18. गर्व–अभिमान

हम गर्व किस चीज पर करते हैं ? सब कुछ नाशवंत है । जवानी पर तो, बुढ़ापा आ जायेगा । जवानी टिकने वाली नहीं । सुन्दर है, तुमसे ज्यादा सुन्दर है । शक्तिमान है तो

गर्व किस बात का ? धन का गर्व कितना भी धन है । सुख धन से नहीं मिलता । धन यहीं पर रह जायेगा । धनवान के घर में दु:ख है । स्त्री कहने पर नहीं, बच्चे पूछते नहीं । पैसा कमाते कमाते धन संचय किया अब सेहत बरोबर नहीं । धन भी तभी काम आता है जब स्त्री अनुकुल हो संतान अनुकुल हो । सेहत अनुकुल हो । जींदगी जीने के लिये समय है । जिन्दगी जी नहीं सकते, गर्व किस काम का ?

संतान अनुकुल नहीं है, हम गाल पर चांटा मारकर लाल करते हैं । धन–तुम कितने भी धनवान हो दादा ने कहा कि इस नक्शे पर, इस मेप पर बताओ तुम कहां हो तुम एक बिन्दु भी नहीं हो । एकअभिनेता हो या राजनेता हो, मान समय पर मिलता है समय बदल जाता है । हमने लालु को जेल में देखा है इन्दिरा गांधीजी को भी जेल में देखा है ।

एकटर को फिल्म फेर एवोर्ड मिला तो क्या हुआ ओसकार तो नहीं मिला । गर्व किस चीज का है ? राज नेता बडे बडे बैठे है पद्मश्री मिला तो भारतरत्न और नोबल प्राइझ वाले भी बैठे है । सार यह है की सब क्षण भंगुर है घमंड किस बात का ? एक ही उपाय है प्रभु का स्मरण । उस स्मरण से ही बेडा पार है । बाकी सब नाशवंत है ।

* * *

19. सुहृद भाव

एक आदमी को देखकर अच्छा लगता है और एक को देखते ऐसा लगता है कि ये कहां से आ गया । यह देखने के बाद हमने शरीर में हमारे अंदर से ऐसी एनर्जी पैदा होती है कि हमारा व्यवहार भी उसके साथ वैसा हो जाता है । एक से बोलते हैं । आओ, बैठो, चाय पीओ, खाना खाओ, फिर जाओ और दूसरे से बोलते हैं, क्या काम है कैसे आए है बस इतना ही । इस प्रकार से सामनेवाले के अन्दर भी वैसी ही वाइब्रेशन जाती है वैसी ही एनर्जी पैदा होती है और उसका व्यवहार भी वैसा ही हमारे साथ होता है । यह सब नेचरल है और दुनिया में हर किसी के साथ होता है ।

अूपम मिशनजी के गुरुजी, पूज्य जसुभाई पटेल क्या बोलते है कि हरेक के साथ सुहृय भाव रखें । यह बडा कठिन है किन्तु सबके साथ सुहृद भाव रखने से दुनिया में प्रेम भाव बढ़ता है और वातावरण में बहुत फरक पडता है ।

हमारी गलती या मुश्केली क्या है, यह है कि, हमें सामनेवालो के गुण नहीं देखते है और अवगुण दिखते है । हम ऐसा सोचते है कि जैसे मेरे में बहुत सारे गुण है और थोडे

अवगुण तो होंगे ही ऐसे ही सामनेवाले के आदमी में भी अवगुण है तो गुण भी होंगे । हमें दो मिनिट के लिए उसके अवगुण भुल जाना है और गुण अगर नहीं भी नजर आये तो मान लेते हैं कि मुझे मालुम नहीं परन्तु कुछ तो गुण इस आदमी में होंगे ही । इस प्रकार सुहृद भाव रखनें से सामनेवाले को भी हमारे लिये अच्छे भाव पैदा होंगे । हम किसी के साथ प्रेम करेंगे तो वो भी हमारे साथ प्रेम करेगा । जैसा भाव हमारा होगा वैसा व्यवहार भी होगा । भाव अच्छे हो तो व्यवहार भी अच्छा होगा । ऐसी एक स्टोरी है ।

सिपाही – ए अन्धे इधर से कोई गुजरा क्या ?

सेनापति – श्रीमान सुरदासजी यहां से कोई गुजरे क्या ?

राजा – हे मुनिवर, यहां से कोई गुजरा क्या ? वो सुरदास बोला, हे राजन ! यहां से पहेले एक सिपाही गुजरा था फिर सेनापति, फिर आप । देखिए उसी व्यक्ति को राजा मुनिवर कह रहा है । एक ही व्यक्ति को संबोधित करने के दो–तीन नजरीया है । डीपेन्ड, करता है हमारा भाव कैसा है ।

मन्दिर के बाहर कई भिखारी बैठे है सबके प्रति एक भाव नहीं होता किसी को देखके ऐसा लगता है की इसकी मदद करदें । मतलब कि सबके प्रति अच्छा भाव रखने से उसकी इज्जत तो बढेगी ही किन्तु हमारी इज्जत भी बढेगी । सुहृद भाव रखें, सबसे प्रेम भाव रखें ।

* * *

20. धर्मात्मा होने का असर

हम सब पवित्र आत्मा है कि इस सतसंग में आते है । मैं आप सबको नमन करता हूं । परन्तु कभी कभी हम सतसंगी होते हुए भी अपने पवित्र होने का अभिमान करते है, अहम् करते हैं कि मैं दानवीर हूं, मैं पवित्र हूं, मैं श्रावण मासकी कथा सुनता हूं, मैं पूरा महीना व्रत रखता हूं, मैंने कामवाली को खाने का दिया । गरीब को कपडे दिये, रोज २ घंटा पूजा पाठ करती हूं । कर्म करना अच्छा है परन्तु उस कर्म का सबके आगे गुणगान करना, अहम करना, उस सारे पुण्य को खा जाता है । हर लेता है ।

प.पू. दादा जे.पी.वासवाणी ने उनके टी.वी. प्रोग्राम में जो स्टोरी सुनाई, वो शेर करता हुं । एक बहन थी अच्छे घर की खाते पीते घर की । पूजा पाठ नितनियम सब करती । गाय को रोटी, कुत्ते को रोटी, चीटीं को आटा सब पुण्य वाला काम करती। जान

बूझकर कोई गलत काम नहीं करती परन्तु इस चीज का उसे अहसास था गर्व था। एक बार घर में कोकरोच आया तो लकड्डी से या जाडू से मार रही थी वह कोकरोच मर गया। फिर तो क्या था वह बहन बहुत अफसोस कर रही थी मेरे से ये क्या हो गया। अभी तो मैं नर्क में जाउंगी। मैं आज तक कोई पाप नहीं किया। सब पुण्य ही पुण्य किया है। कितनी देर तक वह यह सब दोहराती रही।

घर में माली था उसकी पत्नि थी बडी सीधी सादी पवित्र और सरल स्त्री। उसने बोला मालकिन क्यों परेशान हो रही हो। किन्तु मालकिन फिर वोही बोली। आखिरकार उस माली की औरत ने बोला आप परेशान न हो मैं हाथ में जल लेती हूं संकल्प करती हूं की यह कोकरोच मारने का पाप आपके बदले मुझे लग जाये। हम तो वैसे ही माली का काम करते है पेड पौधो को काटने में खुदाई/गुडाई करने में न जाने कितने जीव जन्तु मर जाते होंगे या अनेको परेशान होते होंगे उसके लिये हम भगवान से रोज शाम को क्षमा याचना मांगते है कि भगवान हमें माफ करो। क्या करें हमारा तो पेशा ही ऐसा है।

आप चिन्ता मत करो इस कोकरोच का और इसके बाद भी कभी भुल से दूसरे कोई जीव जन्तु आपके हाथ से मरे तो मुझे बुला लेना, मैं वो भी पाप अपने सिर ले लूंगी, फिर भगवान को प्रार्थना करुंगी मुझे पूरा विश्वास है कि भगवान मुझे माफ करेंगे। मरने के बाद दोनों स्त्रीयां उपर गई। मालकिन को नर्क और माली की औरत स्वर्ग मिला पूछो ऐसा क्यों ? इस प्रकार हमें अच्छे अच्छे काम करें पवित्र बने परन्तु जहां तक उसका ढींढोरा नहीं पींटे मारकेर्टींग नहीं करे। मारकेटींग करने से पूरा पुण्य क्षीण हो जायेगा।

* * *

21. प्यार

प्यार प्यार प्यार। सबसे प्यार करें। तुझ में राम मुझ में राम सबमें राम समाया। करले जगत से प्यार जगत में कोई नहीं है पराया। जब सब अपने है तो अपनों से ही हम बात करते हैं। महेता साहेब मुझे प्यार करते हैं। त्रिवेदी साहेब मुझे प्यार करते हैं। आप सब मुझे प्यार करते हो मतलब आप सब मुझे अपना समझते हो।

* * *

22. देना

प्रकृति हमें देती है सिर्फ देती है । फ्री में देना हम प्रकृति से सीखे । हवा फ्री में, नदी, कुआ, तालाब का पानी मुफ्त में । धरती फ्री में, आकाश, पाताल फ्री में पांचो तत्त्व का पुतला है इन्सान परन्तु प्रकृति पांच तत्त्व फ्री में देती है । सूर्य का प्रकाश फ्री में ।

खेत में एक दाना डालो तो सेकडो वृक्ष के पत्ते फ्री में । जंगल में पूरी प्रकृति फ्री में । हमें देना चाहीये । एक मां है जो देती है किसी से लेती नहीं । बच्चे को प्यार फ्री में, दूध फ्री में । मां अंत समय तक अपने बच्चो के लिये मरती रहती है । बेटी आती है तब मां मूडा हुआ पुराना २० का नोट निकालती है और कहती है मैं गरीब हूं ना, इस लिये तुं नहीं लेगी । पर बेटी मेंने यह तुम्हारे लिये बचा के रखा है । देने से इन्सान का मन बढता है । मान बढता है । बस हम देते रहें । किसी के घर जाये खाली हाथ न जाये कुछ न कुछ लेकर जाये देने से प्यार बढता है ।

* * *

23. संत कबीर दास दोहा–1

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आप खोए ।
औरन को शीतल करें, आपहुं शीतल होए ।।

कड़वा बोले या मीठा बोलो खर्च क्या होता है । पैसा खर्च न तो कडवे बोलने में न मीठा बोलने में । कड़वा बोलने से सम्बन्ध बिगडते है । किसी की इज्जत उतारना फिर बोलना मैं सच बोल रहा हूं । सत्य तो कड़वा होगा । सामने वाले को आग में जला देना परन्तु स्वयं भी अन्दर से वह आदमी जले बगैर नहीं रह सकता, जल जाता है । फिर भी बोलेगा देखो, कैसा उसको जला दिया । दूसरों की गलतीयों पर ध्यान नहीं देता है और उसके गुणो में ध्यान देता है तो वो हंमेशा मीठा बोलेगा । मीठा बोलने से हंमेशा सामनेवाले को आनंद हो जायेगा और खुद को भी आनंद आएगा ।

* * *

24. संत कबीर दास दोहा–2

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय ।।

दुसरे में गुण ढुंढने से हम गुणग्राही बन जाते हैं और हमारे अन्दर वो ही तरंगे आती है । जब भी आप बोलो चन्द्रमा कैसा शीतल है मस्त चांदनी बिखेरता है तो अन्दर से हम शीतलता का अनुभव करते है और चांदनी का आनंद उठाते है । बोलने वाले तो यह भी बोलते है की चन्द्रमां में दाग है । वह आदमी न खुद आनंदीत रह सकता है और न दुसरो को आनंदीत कर सकता है ।

कितने महान व्यक्ति हो गये है महात्मा गांधी । उनको एक अंग्रेजने पूरा बडा लेटर गालियां भरकर लिखा । महात्मा गांधीने पूरा कागज फाड दिया और बापू बोले मैंने उसके पत्र को पढा ही नहीं अगर ऐसा समझा जवाब देंगे मतलब उसकी गालियां मैने स्वीकार की । इसलिये न पढा, न स्वीकार किया, न जवाब दिया । घर परिवार में मीठा बोलने से आपका काम सरल हो जाता है । रिश्ते बने रहते है प्यार बना रहता है झगडे नहीं होते ।

* * *

25. हमें बदलना पडेगा दुनिया नहीं बदलेगी

भगवान जितने भी इन्सान बनाता है उतने ही उनके चहेरे है और उतने ही उनके स्वभाव हैं । इस दुनियामें कोई आदमी बुरा नहीं है । हर एक में गुण दोष होते हैं । अच्छायां और बुराईयां हर इन्सान में होती है । सम्पूर्ण तो केवल एक ही कृष्ण भगवान है । बाकी हम इन्सान में कुछ न कुछ कमी होती है ।

कोई ऐसा समझे कि मैं ही सही हूं तो नहीं, वो गलत है । घर संसार में परिवार में अलग अलग स्वभाव के लोग होते हैं झगडा क्यो होता है । हम जैसा सोचते है हमें आशा होती है कि जैसा मैं चाहता हूं जैसा मेरा व्यवहार है, सामनेवाला भी वैसा ही करें ।वैसा कभी भी होता नहीं है ।

कभी आपने देखा है कि घर में कुछ खाने की चीज है ननंद बोली भाभी आप खालो मुजे इच्छा नहीं है । ननंद को इच्छा है किन्तु ऐसा सिर्फ बोलती है कि भाभी क्या बोलती है । भाभीने भी कुछ बोला नहीं चुपचाप खा गई । फिर वो बोलती है देखा इतना तो बोलती कि आधा आधा खाते है पूरा खा गयी । इस प्रकार मन मुटाव हो जाते है । हम अक्सर सामनेवाले में दोष देखते हैं । हर एक का स्वभाव अलग होता है । हम दूसरे को बदलने की कोशिश करते है वह कभी नहीं बदलेगा और हम दुखी होते है । इससे अच्छा है कि हम बदल जाय और सुखी रहें ।

26. अनासक्ति

इस सृष्टि में अनासक्ति होना बहुत ही कठीन है फिर भी गीता में भगवान कृष्ण अनासक्ति होने को बोलते है ।

योगस्थ: कुरु कर्माणि सङ्गंत्यक्त्वा धनञ्ज्य ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।।१२.४८।।

तू आसक्ति का त्याग करके सिद्धि–असिद्धि में सम होकर योगमें स्थित हुआ कर्मोको कर क्योंकि समत्व ही योग कहा जाता है । तात्पर्य यह है कि हानि–लाभ या सिद्धि मिलेगी या नहीं ऐसा न सोचकर बस लक्ष्य को देखकर कर्तव्य कर्म कर । इसी को योग कहते है । किन्तु आसक्ति इन्सान को जन्म से है –

बच्चा है खिलौनौ में, किशोर अवस्था में साइकल, मोटर साइकल में, जवानी में काम में फिर शादी करने में फिर धन कमाने में, फिर बच्चोमें, फिर मकान बनाने की आसक्ति, फिर बच्चोंकी शादी की आसक्ति । फिर पोते और नातीनो में आसक्ति फिर भी द्वितीय अध्याय में कृष्ण भगवान पूरे अध्याय में अनासक्ति होना लाभ–हानि का चक्कर न करना, स्थितप्रज्ञ होना और योग में रहने की शिक्षा देते है । हम कितने भी बडे हो जाये सत्संगी हो जाये, बडे–बडे साधु सन्तो को भी आसक्ति छुटी नहीं है । बडी उम्रभर में, घर में से आसक्ति निकल जाती है तो अपने बच्चो के बच्चो में पडती है ।

उनमें से आसक्ति निकले तो अपने मान–सन्मान में आसक्ति । मैं बडा कहलाउं परिवार में बडा । बच्चे को बर्थडे पे गीफट दूं कपडे लेकर दूं, खर्ची दूं ये कतर्व्य नहीं आसक्ति है । समाज में बडा कहलाउं मुखी बनुं, महिला मंडल की हेड बनुं यह भी आसक्ति है । मेरा नाम हो मेरे वोटसअेप ग्रुप में सब वाह–वाह करे, यह बडी आसक्ति है । खाने में आसक्ति स्वाद की आसक्ति ।

स्वाद की गुलामी बडी आसक्ति है । बडे बडे राजनेता में भी आसक्ति भले पैसे में नहीं परन्तु नाम कमाने में भी आसक्ति । इस लिये श्री कृष्ण भगवान बोलते है कि आसक्ति पर न जाओ । किसी चीज के लिए झगडा मत करो । जय–पराजय, हानि–लाभ, कीर्ति–अपकीर्ति सबमें समभाव रखना ही योग है और वही अनासक्ति है ।

* * *

27. अनासक्ति–भक्ति–सेवा

भक्ति प्रभु की अनन्य भक्ति, भक्ति मतलब सर्मपण । सिर्फ फल चढाने, अगरबती करे ये भक्ति ठीक है परन्तु प्रभु में स्व समर्पण । भक्ति इश्वर की होती है गुरु की होती है या किसी दोस्त रिश्तेदार की भी हो सकती है । हमें जिसमें पूर्ण विश्वास होता है हम उसके भक्त बन जाते है । भक्ति मीरा की पति के भाव में कृष्ण की भक्ति में सासरिया, पति छोड दिया परिवार छोड दिया, खुद की टीका सहन की । परिवार की भी ग्लानी हुई । कितने कष्ट झेलने पडे । समर्पण मतलब कम्पलिट सरेन्डर । पति रुप में भक्ति में दीवानी हो गई । जहर की प्याली भी पी गई । कृष्ण में समा गई ।

ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन वो तो गली गली गाने लगी । चैतन्य महाप्रभु नाचते नाचते पागल हो जाते थे । समुद्र में गिर गये लोग बचाने आये । अनन्य भक्ति असीम प्रेम समर्पण ध्रुव भक्त, प्रहलाद भक्त प्रभु के अटल विश्वास भगवान नरसींह अवतार बनके आये । नरसींह महेता की भक्ति मारी हुंडी स्वीकारो शामला गिरिधर गोपाल । हमें भी प्रभु की भक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ करनी चाहिये । सम्पूर्ण समर्पण ।

सेवा इन्सान मात्र की, पशु–पक्षी की, कीडे–मकोडे की, कुत्ते को रोटी, गाय को घास, चीटी को आंटा अच्छी सेवा है । आप सब करते हैं । पानी पीलाने की सेवा, प्याउ की सेवा, गली में, रोड पर कुल केज सेन्टर टेन्ट बांधकर या टेबल पर रखकर । कुए, टयुबेल की सेवा, पानी की पाइपलाइन की सेवा तन, मन, धन से । अन्नक्षेत्र की सेवा तन से मन से धन से । लंगर में प्रसाद में महाप्रसाद में खाना बांटने की सेवा, बरतन उठाने की, पानी पिलाने की, बरतन धोने की, टेबल कुर्सी उठाना, झाडू मारने की सेवा लोग करते है । बगीचे की सेवा, पानी पीलाना, गुडाई करना ।

मंदिर की सफाई, बेन्चों की सफाई मुख्य है सेवा भाव । भाव होना जरुरी है । एक ग्लास पानी पिलाने का भाव है । होस्पीटल में जाके मरीजो को पूछने का बात चीत करने का । होस्पीटल में दातुन की सेवा, दवाईयों की सेवा, नर्स, लेबर लेने देने की सेवा, टिफिन देने की सेवा । जरुरत है भाव की । भाव से किसी को एक ग्लास पानी पिलाया तो काफी है । भाव से किसी बुढे के पास जाकर आधा धन्टा बैठो तो भी काफी है । लाखो रुपीयों का दान करो परन्तु भाव से एक रुपये का भी दान बडा है । एक बुढी की तपस्या का १० रुपिया मन्दिर के लिये बडी बात है ।

* * *

28. शिव प्रागट्य

शिव प्रागट्य शिव का प्रकट होना। शिव तो इस धरती पर हजारो लाखो करोडो सालो से है जब से प्रकृति है तब से शिव भी है। क्या हमारे भीतर शिव प्रकट हुए। हम कितने सालों से शिव पुराण की कथा सुन रहे है। क्या शिव हमारे भीतर प्रकट हुए। क्या हमारे भीतर में कुछ फर्क आया ? क्या हम शिवमय हो गये ? मेरे को लगता है कि आप सब शिव भक्त हैं। इतने दिनो से रोज कथा सुन रहे है तो पक्का ही हमारे अन्दर शिव आ गये है हम शिवमय हो गये है। आप नोट करना। हमारे वाणी वर्तन में भी बहुत फर्क होगा।

शिव मंगलकारी है सहज कल्याण करते है। सब का भला करते है। हम सब भी शिव भगवान के अंश है हमारे अन्दर भी शिव प्रकट हुआ है और हम भी सबका भला करेंगे। दूसरों के काम आएगें सेवा करेंगे सबको राजी रखेंगे। सबको प्रसन्न करेंगे। पूरा जहां शिवमय दिखेगा। सब में शिव बसा हुआ है। ''आपो दृष्टि मां तेज अनोखुं सही सृष्टिमां शिव रुप देखुं।'' फिर क्या चाहिये आप सब धन्य हो गये। आप भी शिव हो गये और पूरी सृष्टि में हरेक को आप शिव की तरह देखते है। देखो हमारी औरा में फर्क आया है। हरेक इन्सान की औरा होती है। देखो भगवान शिव के पीछे, कृष्ण या माताजी किसी भी भगवान के पीछे एक रोशनी का चक्र होता है। जितना इन्सान ऊंचा पवित्र उतना ''औरा (तेज–रुप)'' ज्यादा। देखो महापुरुषो को देखो। पुज्य चन्द्रकान्त शुक्ल की ओर। यों ही आर्शीवाद लेने का मन होता है। पांव पडने का मन होता है। सतसंग में आने से कथा सुनने से हम शिवमय हो जाते हैं। हमारे भीतर शिव प्रकट होते है हमारी औरा से बढोतरी होती है। अपने को, हमे देखकर लोग प्रसन्न होते है। शिव कल्याणकारी है। पवित्र है। भगवान को देखने से ही आनंद आता है वैसे ही हमें देखने से, सब को सुख मिलता है वो हम चेक करें। प्रसन्न चित्त रहे। हम सबको देखके खुश रहे। सब हमको देखकर खुश रहे। पूरी सृष्टि शिवमय हो जाये हमारे कथा सार्थक होती है।

* * *

29.द्वैत भाव – अद्वैत भाव

शिवोहम् शिवोहम्। अद्वैत भाव जीव और शिव अलग नहीं है। एक है। जो तुझमे है वो मुझमे हे। मेरे में आत्मा है शिव है। आपमें आत्मा है शिव है। दो नहीं एक है।

न मे मृत्युशंका न मे जातिभेद:, पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।

न बंधू: न मित्रं गुरु: नैव शिष्यं, चिदानंद रुप: शिवोहम शिवोहम ।।

एक ही रुप निराकार, निगुर्ण, अद्वैत भाव । दूसरा है द्वैत भाव । जीव और शिव दो ही चीज है, तीसरा कुछ है ही नहीं । सृष्टि का रचियता परमात्मारुप कोई अलौकिक शक्ति है, जिसके पास में पूरी सृष्टि का नियंत्रण है, वह शिव है । हम जीवात्मा अनेक अंश है, उसका अंश ही जीव है । इस सृष्टि में दो ही चीज है । जीव और शिव । शिव नियंत्रता है । पृथ्वी में है, पूरा सिस्टम है, पूरी प्रकृति को वश करके चलाता है । हम आत्मा है वो परमात्मा है । सब परमात्मा से पैदा हुये है और वापिस उसमें ही समा जाते है । आत्मा और परमात्मा जीव और शिव ।

द्वैत भाव : मीरा ने प्रेम, भक्ति की । प्रेम किया, प्रभु को, पति रुप में स्वीकार किया । एक मीरा एक कृष्ण दो, द्वैतभाव, राधा और कृष्ण द्वैतभाव । भक्ति हम ईश्वर की करते है । दशरथने राम से अनुराग किया एक दशरथ एक राम द्वैत भाव । पार्वतीने शिव की पूजा की । पति भाव में किया । द्वैत भाव, परन्तु शिव और शक्ति एक रुप, एक भाव से शिव है वो भक्ति है जो शक्ति है वो शिव है । अर्ध नारीश्वर एक में से ही दो रुप निकले हैं । फिर से एक ही शिव अद्वेत भाव । यह अद्वैत भाव बडा कठिन है ।

भगवान तू भी शिव है में भी शिव हूं । जो तू है वो में हूं । यह बहुत पहुंची हुई स्थिति है । इस पर हम और आगे साधारण व्यक्ति के लिए पहुंच पाना मुश्किल है । उस मुकाम पर आदि गुरु शंकराचार्य जैसे ही पहूंच सकते है । हम मीरा की तरह, राधा की तरह, नरसिंह भगवान की तरह, शबरी की तरह प्रभु को पा सकते है । उसका गुणगान गा सकते है । उसकी पूजा पाठ कर सकते है । चैतन्य महाप्रभु की तरह पागल हो कर नाच सकते है । प्रभु शिव है हम जीव है । वे परमात्मा है हम भक्त है द्वैत भाव । भक्ति करके उस तक पहुंच जाये यह ही प्रार्थना ।

* * *

30. मुझे ब्रह्म ज्ञान है

राजा दशरथ ने ऐलान किया कि जिसको भी ब्रह्म ज्ञान है वो दस हजार गाय सोने से मढेली लेके जाय । याज्ञवल्कजीने अपने शिष्यो को बोला गाय लेके आओ । किन्तु

ऐसे नहीं बोला कि मुझे ब्रह्म ज्ञान है । ये बात नोट करने वाली है । ब्रह्म ज्ञान है परन्तु बोलना नहीं है, नहीं तो अहंकार हो जायेगा और अहंकार का होना ब्रह्मज्ञान नहीं है । किन्तु इस बात को लेकर हम अपने आप को टटोले । हमें थोडा भी ज्ञान होता है तो हम एकदम बोलते है मुझे मालुम है मुझे मालुम है अरे यार जाने देते है किसी ने जोक सुनाना शुरु किया तो एकदम सुना हुआ होगा, एकदम से बोलेगा मैने सुना हुआ है सब्र नहीं है । मेरा सुना हुआ है तो जरुरी नहीं की दूसरों का भी सुना हुआ है । शान्ति से सुन भी सकते हैं किन्तु नहीं हमें यह बताकर खुशी होती है कि यह जोक या स्टोरी पहिले से मुझे मालुम है यह अहंकार है । अधुरा ज्ञान है परिपक्व वो है जो ज्ञान को पचा सके सिर्फ अपनी वाह वाह न करें । मैं मैं तो करा करता है मगर सच्चे ज्ञानी बने । ज्ञान को पचाना सीखे । कोई कुछ बता रहे है तो उसकी बात आधे में न काटे ।

* * *

31. मेरे जीवन का लक्ष्य

हर एक आदमी का हर एक क्षेत्र में कोई न कोई लक्ष्य होना जरुरी है बिना लक्ष्य के नदी में लुढकते हुए पथ्थर की तरह है । मेरा लक्ष्य – ऐस्ट्रोनोट। लक्ष्य तक पहुंचने के लिये क्या करना पडेगा ? लक्ष्य पहुंचने के बाद ईमानदारी से देश सेवा हेतु कार्य करना होगा ।

* * *

32. आनंद का अनुभव

हर एक प्राणी को आनंद चाहिये । प्रभु ने न सिर्फ इन्सान को परन्तु पशुपक्षी को भी ऐसा बनाया है कि उसे आनंद चाहिये । आनंद की तलाश है । आनंद कहां है ? आनंद अन्दर है । आनंद कहां मिलता है ? दुनिया की बहुत सारी बातों में । पशुपक्षियों को भरपेट खाना मिल जाना, पीने को पानी मिल जाना, भैंस को तालाब मिल जाना, हाथी को नहाना मिल जाना तो आनंद ही आनंद । इन्सान सिर्फ पेट भरने से संतुष्ट नहीं होता है उसे बहुत सारी चीजे चाहिये खाना पीना खेलना संगीत सुनना उत्सव मनाना वगैरे । सबसे ज्यादा आनंद तो सतसंग में प्रभु के नाम स्मरण करने में है ।

* * *

33. अच्छी आदतें

शुक्ल पक्ष में अच्छी आदते बढाए, जैसे चन्द्र बढता है। कृष्ण पक्ष में खराब आदते धटाए जैसे चन्द्र घटता है। सुबह को जल्दी उठना, भगवान का आभार मानना, भगवान के सामने बैठना, भगवान से सुचनाए लेना, सारे दिन का प्रोग्राम भगवान से पूछ कर बनाना, मोर्नींग वोक, प्राणायाम, कसरत, पक्षीयों को पानी, कुत्तो को रोटी, गाय को घास, पेड में पानी, पूजापाठ, दैन्कि कार्य, रात को प्रभु को आभार, पूरे दिनका हिसाब देना, अच्छी पुस्तक पढना, सुबह सुबह अखबार नहीं पढना, औरो की प्रशंसा करना, सेवा कार्य, किसी को मदद रुप होना, संगीत सुनना, इवनींग वोक, शरीर का पूरा ध्यान रखना, चबा के खाना, कम बोलना, दूसरा कोई बोले तो उसको काटके अपनी बात नहीं सुनाना, दुसरों की निन्दा नहीं सुनना, उठ जाना, बात को बदल देना, मा–बाप की सेवा, घर का पूरा ख्याल, बच्चों का ख्याल रखना, हसना और हसाना।

* * *

34. भजन के शब्दों में तल्लीन होना

भजन गाते हैं उसके भाव में विभोर होना, भजन के शब्दों पर ध्यान होना, भजन में तल्लीन होना, उसकी लय में विलय होना, भजन जब हृदय स्पर्श करेगा तब ही उसका असर दिखेगा। बहुत सारे लोग इधर उधर देखते हैं इधर उधर बातें भी करते हैं। मोबाइल भी उठा लेते है। हम सब संसारी है ऐसा हो जाता है इच्छा तो भजन में लीन होने की है परन्तु परिस्थिति वश ऐसा हो जाता है। मैं भजन में लीन हूं और देखूं दुसरा तो इधर उधर देख रहा है उसके लिये हीन भाव रखना, यह अभिमान है।

भगवान गीता में कहते है कि यज्ञ करो। १२ प्रकार के यज्ञ बतलाये है उसकी चर्चा आगे करेंगे किन्तु कहा है कि आप यज्ञ करते हो किन्तु अगर ध्यान औरो पर है जो यज्ञ नहीं करते। उन्हें हीन भावना से देखना स्वयं को उच्च स्थान पर देखकर गर्व है, अभिमान है, यह अभिमान पूरे यज्ञ के पुण्य को हर लेता है। उसी प्रकार मैं भजन में ध्यान देता हूं सत्संग में ध्यान देता हूं और कथा में ध्यान देता हूं परन्तु देखता हूं कि कई लोग इधर उधर की बाते करते है उसके लिये हीन भाव रखना भी पाप है। वो अपने कथा के सत्संग के पुण्य को हर लेता है। सिर्फ ही सिर्फ भजन में ध्यान देना उसमें तल्लीन होना लय में विलय होना, आनंद लेना, प्रभु में मिल जाना, शिवमय हो जाना।

* * *

35. भगवान से क्यां मांगे ?

सब लोग मांगते है, सुबह से मांगते है । एक ने मांगा सारी जमीन सुबह से शाम तक दौड़ा । हमारी हालत भी वही है दौडते रहते है बचपन से आज तक क्या क्या मांगा ? अब वक्त आ गया है मांगो ऐसी वस्तुओं को–अच्छी सेहत, सुख शान्ति, न बंगला, न गाडी । सबसे बडी मांग प्रभु अपने में समा ले । रोज खुद को चेक करें हम कितना नजदीक गए । अभी बहुत दूर हैं ।

* * *

36. लव इस हेवन, हेवन इस लव

भगवानने हमें एक बहुत बडी चीज दी है वो है प्यार । न सिर्फ ये इन्सान में है किन्तु पशु–पक्षी भी एक दूसरे को प्यार करते है । एक प्रेयसी अपने प्रेमी के प्रेम में डुब जाती है तो दोनो को पता भी नहीं चलता कि कितना समय निकल गया । ये भी पता नहीं चलता कि उन दोनों के सिवाय आसपास क्या हो रहा है । बस ये तो अपने प्रेम में डुबे रहते है । इसको कहते है स्वर्ग । एक मां अपने बच्चों को छाती से लगाकर बच्चे से असीम प्रेम करती है, अपने जीगर के टुकडे को इस कदर प्यार करती है कि उसे पता भी नहीं चलता कि उसका पति आकर उसके सामने खड़ा है । मां अपने बच्चे के प्यार में सुद्ध बुद्ध खो बैठती है, उसी स्थिति को बोलते है स्वर्ग । एक दोस्त अपने दोस्त के साथ रात भर चाहे बारह बज जाये या सुबह के चार बजे । दोनो अपनी दोस्ती के प्यार में ऐसे मिलते है की पूरी रात भी उन्हे कम लगती है, उसे कहते है स्वर्ग । दो दोस्त दोनो समलैंगीय पुरुष भी हो सकते है । या वह सहेली भी हो सकती है ये ऐसी दोस्ती प्राय: स्कूल कोलेज के दिनों में होती है । वो प्रेम का सम्बन्ध वो प्यार का वक्त होता है स्वर्ग ।

ऐसी ही स्थिति गुरु शिष्य में भी हो सकती है । इष्टदेव के साथ भी हो सकता है । ऐसा प्रेम में, भाव में खो जाना कि अब कुछ न रहे । भगवान भक्त एक हो जाये । उसको कहते है स्वर्ग । स्वर्ग प्यार है और प्यार स्वर्ग है । सच्चा प्रेम वो ही कर सकता है । जिसे स्वयं की, खुद की न पडी हो । हम सिर्फ भगवान से मांगते रहेंगे तो सच्चा प्यार हो ही नहीं सकता । सच्चे प्यार में खुद को भुलाना होता है । जीव और शिव दोनो मिलकर एक हो जायें, उसी स्थिति को स्वर्ग कहते है । सत्संग में आये, भगवान में खो जायें । भजन में खो जाय, धुन में खो जायें उस स्थिति को बोलते है स्वर्ग ।

37. गीव (देना)

इन्सान का स्वभाव है लेनां। छोटा बच्चा, जो आए ले लो मुंह में डालो। खिलौने पर झगड़ा। बडा हुआ स्कूल में पेन्सील, रबर, बुक लेने की दानत। दूध के पाउच घर ले आने की लालसा। ट्रेन के नैपकीन तक लेके जाना। आज तक मारकेटींग में एकस्ट्रा १०० एम.एल. फ्री या फीर एक पर एक फ्री। यह क्यों है ? क्योंकि कि हमें फ्रि लेने कि आदत है, दानत है। मज़ा आता है, आनंद आता है। एक प्रकृति ऐसी है जो देती रहती है। पहाड सौंदर्य देते है। झरने सौंदर्य देते है। नदियां जल देती है। आकाश मुफ्त वायु। मुफ्त सबसे बडा देने वाला है सूर्य बरसों से दे रहा है हजारो करोडो सालों से रोशनी उर्जा दे रहा है बिना कुछ लिये हुए। खूटता ही नहीं।

हमें डर लगता है देने से हमारा खजाना खाली हो जायेगा। देने से कोई खूटता नहीं। बुरी आदतों से खुटता है। जुआ शराब आदि से खूटता है। ओम शिवमंडली के सत्संगी देने में मानते है। यात्रा/प्रवास में भी चाय मेरी तरफ से। केले मेरी तरफ से। नाश्ता मेरी तरफ से। यहां तक की खाना मेरी तरफ से यह एक सत्संगी ही कर सकता है। पेड़ पौधो को भी, एक दो तो सो देते हैं। जमीन में बीज डालो, हजारो चावल बीज निकलते है। भगवान ने हमे बहुत कुछ दिया है। द्रव्य यज्ञ करे। पानी के परब अन्नक्षेत्र, स्कूल–कोलेज, होस्पीटल। द्रव्य यज्ञ आदि दान करें। गीता में भी लिखा है की द्रव्य यज्ञ करें जो देता है उसका शेश धन प्रसाद बन जाता है पवित्र बन जाता है। उसका बीसवा भाग अपनी कमाई में से निकाले ऐसा गीता कहती है। एक ही बात, गीव गीव, प्यार दो, मुस्कराहट दो।

* * *

38. भाव से

हर काम दिल से भाव से करें। रसोई बनाओ तो भी दिल से भाव से बनाओ। स्वादिष्ट बनेगी। किसी को खाना खिलाओ तो भाव से खिलाओ। दान करो तो भी भाव से करो। भजन गाओ तो भाव से। सत्संग में आओ तो भाव से। हरेक काम भाव से करेंगे तो आनंद आयेगा। काम वाली से काम लो तो भाव से। सब में भगवान को देखो, भाव से।

39. विजितात्मा

हम सब सत्संगी है भगवान के भक्त है । आध्यात्मिक है । हम समझते है की हम रोज पूजा करते है । मजा करते है । मन्दिर में जाते है सत्संग में जाते है । भजन गाते है । हम सब प्रभु के पास पहुंच गये । किन्तु हमे अपने आप को टटोले तराजू पर तोले, हम कितने पानी में है । भगवान श्री कृष्ण कहते है कि सच्चा कर्मयोगी वह है जो –

''जितेन्द्रीय'' है । जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय पायी है । हमें संसार के सुखो के पीछे भागना नहीं है । हम तो स्वाद में जो चीज अच्छी लगी उसे जल्दी से बिना सोचे खा लेते है । सोचते नहीं की यह मिठाई यह पकवान हमारे लिये हितकर है भी या नहीं ? दुनिया में कितनी चीजे है जो हमें मालुम है कि ये अच्छी नहीं फिर भी उसके पीछे हमारी इन्द्रिया बिना प्रयास भागती रहती है । हमारी इन्द्रिया हमारे वश में नहीं । हम आज से देखे कि सचमुच हमारी इन्द्रीयां हमारे वश में है कि नहीं ?

''विजितात्मा'' जिसने अपने शरीर व मन को जीत लीया है । हम देखे कि क्या हमारा मन हमारे वश में है ? हम बैठे कहां है ? मन कहां घुम रहा है ? रसोई बनाते बनाते दिमाग कहां कहां घूम जाता है । किसी ने हमें दो शब्द बोल दिये, वो ही दिमाग में गुंज रहे है फिर मैं उसे ऐसा जवाब दूंगी । इस बार तो, तड या फड नहीं तो जरा ढंग से बोलुंगी खराब लगे तो लगे । बोल भी दूंगी । अगर ये ही बात माफ करदी जाय तो दिमाग से निकल जायेगी मन घुमेगा नहीं, मन हमारे वश में रहेगा ।

''विशुद्धतात्मा'' हमारा अन्त:करण विशेष रुप से शुद्ध । हम हमारा मन देखें औरो का नहीं । अपने आप को हमारा अन्त:करण कितना शुद्ध है हमारा मन औरो के प्रति कैसा मीठा है, मिठास भरा है । हमारा मन इज्जत पूर्वक बात करता है, औरो के प्रति मान–सन्मान है । जब हम शुद्ध होते हैं तो राग द्वेष आता ही नहीं । हर व्यक्ति समान लगता है इसे कहते है ''विशुद्धतात्मा'' ।

''सर्व भूतात्मा'' सब आत्माओं को अपनी आत्मा मानना सब आत्माए परमात्मा का अंश है मैं भी प्रभु परमेश्वर का अंश हूं तो फिर सब आत्माए मुझे अपनी लगनी चाहिये । सब एक । जब सब आत्माए एक लगेगी तो सबमें प्रेम भाव प्रकट होगा । सबसे प्यार । सब एक । मुझमें और तुझमें कोई फेर नहीं, कोई फेर नहीं । इन चारो बातो वाला पुरुष योगयुक्त है । वह सब कुछ करता हुआ भी कुछ नहीं करता । किसी कर्म में लिप्त नहीं होता ।

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रिय: ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ।।५.७।। (भगवद् गीता)

40. तो क्या ? (Then what ?)

मैं अगर १८ पुराण पढ़के बैठा हूं, तो आपको क्या, दूसरे लोगों को क्या फायदा । मैं मस्त लगता हूं, पाठ करता हूं यज्ञ करता हूं तो मेरे पडोशीयों को क्या फायदा ? मेरे से समाज को क्या फायदा ? मैं एम.डी. डोक्टर हूं, पढ लिया हूं, कुछ कमाता हु, तो आपको मेरे से क्या फायदा ? मैं इन्जीनीयर हु, बडा वकील हूं, तो उससे दूसरों का क्या फायदा ? इस प्रकार मैं कितना भी बडा आदमी बन जाऊं, पर जब तक सामने वाले को सुख नहीं देता, तब तक मेरी कीमत शून्य है । हम जो कुछ है वो बराबर है परन्तु समाज को उपयोगी बने ।

मैं डोक्टर हूं तो किसी गरीब को फ्री में चेकअप करके दवाई दूं । मैं इन्जीनीयर हूं, तो किसी संस्था का काम, सेवा भाव में करुं । मैं मजदूर हु तो भी अगर में दिल से ईमानदारी से मजदूरी करुं तो भी यह मेरी सेवा होगी । सेवा तन मन धन तीनों से होती है । किसी बुढे आदमी के पास १० मिनिट बेठना भी सेवा है उसका हाल चाल पूछुं । किसी अस्पतालमें मरीजो का हाल चाल पूछना भी सेवा है । किसी लंगर में जाऊं भोजन परोसना भी सेवा है । मतबल हम समझते है कि हम समाज में बहुत बडे प्रतिष्ठित आदमी है । कोई केवल पैसे से, बंगलो से या बडी गाडी या बडी पोस्ट से प्रतिष्ठित नहीं बनता । बड़ा आदमी बनता है सेवा करने से ।

किसी को पढाओ किसी को शिक्षा दो, फिस दो, युनिफोर्म दो । अरे अपने घर में ही पोते पोतियों की सेवा करेंगे तो ही हमारी किंमत बढेगी । उनको घुमाएगें, पढाएगें, समझाएगें तो उनको भी मजा आएगी । सिर्फ बैठे बैठे हुकम देंगे/ओर्डर देंगे, तो पोता भी बोलेगा कि ये दादा अब बहुत बूढा हो गया कब मरेगा ? सारा दिन मुझे डाटता रहता है सारा दिन समझाता रहता है । दूसरों को सुख दो । अपने आसपास घर पडोस समाज में दूसरों को सुख दें । सबको खुश रखें । तो ही हम प्रिय या प्रतिष्ठित आदमी बन सकते हैं । बाकी बडे पोस्ट या पद से या बड़े व्यापारी होने से कोई बड़ा नहीं बनता । कोई कभी बात करें तो भी जवाब दो । ऐसा नहीं कि अभी तो मेरे पास टाईम नहीं तो बाद में बात करते हैं । दूसरो को खुश करो, सुख दो, आप निश्चय ही बड़े आदमी बन पाएगें । मुस्कुराते रहो, खुश रहो, बीमार नहीं पड़ोगे ।

* * *

41. सुहृद भाव

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ।। ५.२९ ।। (भगवद् गीता)

मुझे सब यज्ञों और तपों का भोक्ता, सम्पूर्ण लोको का महान ईश्वर तथा सम्पूर्ण प्राणीयों का सुहृद जानकर मेरा भक्त शान्ति को प्राप्त होता है ।

''सुहृदं सर्वभूतानां''

परमात्मा सर्व प्राणीयों के हेतु 'सुहृद' है । बिना मतलब के प्यार करनेवाला, बिना अपेक्षा के चाहने वाले । सब पर अकारण करुणा करनेवाले । किसी से कुछ भी अपेक्षा नहीं । भगवान का यह करुणामय स्वभाव ही मन को स्वाभाविक शान्ति देता है ।

जब हमें परमात्मा के हेत भरे स्वभाव से सुख मिलता है तो हमारे ऐसे ही स्वभाव से लोगो को सुख मिलेगा ही मिलेगा । प्रभु प्रेममय है, करुणामय है, हमें अकारण ही सब कुछ दे रहें है । हमारी इच्छाए पूरी करते है तो हमें कितने अच्छे लगते है । लोग लाखो करोडो लुटाते है केवल सेवा के लिये । प्रभु के पीछे के केवल पैसा खर्च करके अनगिनत सेवा करते हैं । जूते की सेवा, खाना बनाने की सेवा, सफाई की सेवा, बर्तन धोने की सेवा यह सब क्यों करते है, क्यों की प्रभु हमें अच्छे लगते हैं ।

शुरु शुरु में तो हमें भगवान से अपेक्षा होती है, इच्छाए पूर्ण कराने की, अपने काम करवाने की, किन्तु अन्त में एक ऐसी स्थिति आ जाती है कि कुछ भी आशा अपेक्षा रखे बगैर केवल प्रेमवश भगवान के आगे माथा टिकाते है । उसका हर कार्य करते है, सेवा करते है ।

* * *

42. प्यार दो

क्यों क्यों क्यों ? भगवान सुन्दर है बिना शरत के हमें प्यार करते है हमारा भला करते हैं । हम भी सृष्टि के सब जीवों के साथ अच्छा व्यवहार करें, प्यार करें । राह चलते को राम राम, जय शंकर, जय रामजीकी बोलेंगे तो वह कितना खुश होगा ? सब्जी वाले, रेक्डी वाले को कभी चाय पानी का पूछेंगे तो कितना खुश होगा । घर पर आए किसी कारीगर, कारपेन्टर, प्लम्बर को कभी कोई वस्तु भेंट में दो तो वो कितना खुश होगा उसे यह नहीं दिखेगा कि वस्तु ५०–१०० रुपये की है परन्तु यह दिखेगा कि मुझे प्यार किया ।

किसी बडे बूढे को प्यार से रास्ता क्रोस करा लिया, उसके पास आधा घण्टा बैठ के उसकी बाते सुनी तो वह कितना खुश हो जायेगा । दोस्तो को सहेलीयों किसी को मदद करके देखो । वह तो खुश होगा किन्तु खुद को भी खुशी मिलेगी । सुहृद का मतलब है बिना अपेक्षा के मैने किया, वो मुझसे करे या बाद में करेगा । ऐसी सोच नहीं होनी चाहिये । केवल मैं किसी को प्यार करु, किसी को मदद करुं इसी भावना को सुहृयभाव कहते है ।

* * *

43. प्रार्थना

हम सब भगवान को प्रार्थना करते है । प्रार्थना द्वारा हमारी मनोकामना पूर्ण होती है । भगवान सुनता है, जरुर सुनता है । प्रार्थना करने के लिये हमें पहले आंख खोल के भगवान को प्रार्थना सुनानी चाहिये, फिर मन से बहुत धीमी आवाज में वो ही प्रार्थना दोहरानी चाहिये । फिर शांत मन से अन्दर ही अन्दर वो ही प्रार्थना करनी चाहिये । अन्त में चित्त को शांत करके आंखे बन्द करके धीरे–धीरे भगवान में लीन हो जायेंगे । स्वयं के अस्तित्व को भूलकर केवल इष्ट में खो जाना चाहिये । प्रार्थना जरुर स्वीकार होगी ।

प्रभु के लिये सुबह से शाम तक, एक के लिये कार्य करो । खाना प्रभु के लिये, सोना प्रभु के लिये, घूमना फिरना प्रभु के लिये । आरम करना प्रभु के लिये । प्रभु तुझे राजी रखने के लिये यह कार्य करता हूं या करती हूं । भजन गाना, सत्संग में जाना, उस एक मालिक के लिये । सुबह उठकर मोर्निंग वोक, प्राणायाम, ध्यान जो भी करें उस मालिक के लिये ।

* * *

44. सुहृद भाव

सुहृन्मित्रायुदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ।।६.९।। (श्रीमद् भगवद् गीता)

सुहृद, मित्र, शत्रु, उदासीन, मध्यस्थ, ईर्ष्यालु, बन्धु, साधु, पापी–इन सभी में एक समान भाव रखनेवाला विशेष है, उच्च है ।यह सम्भव है–असमभव नहीं तो कठिन तो है । स्वयं ज़ानानन्दजी महाराज जिसने गीता प्रेरणा लिखी है वे कहते है कि व्यवहार में बहुत कठिन है परन्तु जब स्वयं श्री कृष्ण भगवान ने लिखा है तो सब के लिये एक भाव रखना पडेगा । खैर, यह बहुत गहन विषय है ।

सुहृद उसे कहते है जो हंमेशा मुस्काराता रहता है । अन्दर से भी खुश है बाहर से भी खुश है । बिना कारण सबकी मदद करनेवाला ही सुहृद है । किसी मतलब के बगैर, किसी अपेक्षा रखे बैगर, न पुण्य न पाप, न यश, किसी चीज की आशा बिना सबकी मदद करना, जिसके स्वभाव में है उसे सुहृद कहते है । आप कहेंगे ऐसे लोग इस दुनियामें मिलने मुश्किल है । परंतु हैं, कुछ तो लोग हैं, जिनके कारण यह दुनिया चल रही है । कोई साफ सुथरा नहीं, परंतु तुम्हारे हमारे जैसे गृहस्थ जीवन में भी ऐसे लोग मिल जाते हैं ।

एक सत्य घटना : मेरा खुद का अनुभव, मेरा मुन्द्रा से वापस आना – कार में पक्चर पडना । ८० – ९० की स्पीडसे मैं जा रहा था । उसने होर्न मारते मारते २–३ कि.मी. मेरा पीछा किया और अन्तमें गाडी खड़ी करवाके बोले आपकी गाडी में पक्चर है । इतनी स्पीड से टायर फट जायेगा तो एक्सीडन्ट होने की सम्भावना है । मैने गाडी खड़ी रखी और उसे धन्यवाद कहा फिर बोला मुझे तो टायर बदलना आता नहीं । उसने बोला लाईये मैं बदल देता हूं । शायद मेरी उम्र के कारण होगा । उसने मुझे टायर बदलने में मदद की । बातचीत से हमारा परिचय हुआ । वह मांडवी में एक कोलेज में प्रोफेसर था । कोई हठ नहीं कोई अभिमान नहीं, कोई अपेक्षा नहीं । बस अपना काम करके चला गया । ऐसे सहृद लोग हैं । भगवान हमें भी सुहृद बनायें ।

* * *

45. फिक्र, चिंता, टेन्शन

- लगभग काम का फिक्र हर किसी को रहता है ।
- कल ये करने का है वो करने का है वक्त कम है ।
- भगवानने सभी को २४ घंटे दिये हैं ।
- टाइम मेनेजमेन्ट
- सुबह जल्दी उठो । भगवान के सामने बैठो, उसकी प्रार्थना स्तुति करो, उसको समर्पित हो जाओ, मैं कुछ भी नहीं । भगवान तुं ही तुं, सब कुछ है तुं, ऐसा भाव रखो, हम कुछ नहीं । मेरा मुझमें कुछ नहीं । जो करता है, मेरा प्रभु करता है, मैं कुछ नहीं ।
- भगवान के सामने जितनी देर बैठो अच्छा है । ध्यान करो ।
- उसके बाद शान्ति से बैठकर आज क्या क्या काम करने हैं उसका लिस्ट दिमागमें बनाए और कैसे करेंगें वोभी ध्यान रखें ।

- पुरे दिन में जो काम करने हैं उसकी लिस्ट बनाए और हरएक काम कैसे करना है वे भी ध्यान रखें। दोपहर को एक बार फिर लिस्ट चेक करें, रात को फिर चेक करें। कुछ ना कुछ तो छुट जाएगा, वह कल पर रखें। इस प्रकार प्लानींग करके महेनत करके सब काम पुरा करें, तो कोइ फिक्र नहीं होगी, काम नहीं करोगे तो फिक्र होगी।

***

46. मितभाषी – मिष्ट भाषी – अर्थ भाषी

- भगवानने हमको वाणी दी है। सचमुच हम बडे शुक्रगुज़ार हैं। दुनियामें कितने लोग है जो कुछ भी नहीं बोल सकते।
- वाणी का सदउपयोग करें। कितने लोग मौनव्रत धारण करते हैं। ज्यादा बोलनेसे अपनी उर्जा का खर्च होता है। कोशिष करके मौनव्रत भले न रख सके परंतु कम बोलने का प्रयास जरुर करे। जितना हो सके उतना कम बोले।
- ''मिष्टभाषी'' बोले तो, मीठी भाषा बोलें। प्राय: हम सब मिष्टभाषी हैं किन्तु गुस्से में हमको मालुम नहीं पड़ता, कि हम क्या बोल रहे हैं। हमारी जुबान कहां चली जाती है और हम न बोलने के वचन बोल बैठते हैं। कबीर जी ने कहा है ऐसी बानी बोलीअे मन का आपा खोये, औरन को शीतल करें आप भी शीतल होंए।
- मुख्य बात है गुस्से के समय स्वयं पे कंट्रोल करें। गुस्से में तीन प्रकार के लोग होते हैं। एक वो जो अन्दर से सरल होते है और जो जी मे आता है बोल देते हैं। सामने कौन है वो भुल जाते हैं और कोई वैर भाव नहीं रखते।
- दुसरे वो होते हैं जो सोचते हैं अभी रहने दो समय आने दो इसकी तो मैं ऐसी वाट लगाउंगा, ऐसी खबर लूंगा की वह पुरा जन्म याद करेगा। मललब अन्दरसे दुश्मनी पालता है।
- तीसरे वो है जो की गुस्सा करके भी कुछ नहीं बोलता। थोडा वक्त लगाता है और बादमें सोचता है मित्र, वो तो है ही अैसा मैं तो समजदार हु।

बेवकुफ से बेमतलब थोडी उलझ जाउंगा और उसे माफ कर देता है। खुद भुल जाता है और सामने वाला भी भुल जाता है। कहनेका तात्पर्य है कि मृदु वचन बोलने से सकारात्मक भाव पैदा होता है और दोस्तीका प्यारका वातवरण बनता है। सब जीव सुगम

है कितने लोग चालु होते हैं तो बन्द ही नहीं होते । बेमतलब, बिना अर्थ के बिना कारण बोलते रहते है । अपने दादा, परदादा खुद की भी बड़ी–बड़ी बाते सुनानेमें बड़ा रस लेते है अगर शरु हो जाए तो उसे नींद आ जाने तक पूरी रात उसका भाषण खत्म ही नहीं होता । इसका मतलब यह नहीं की हम अपनी अच्छी बात किसीके सामने रखें ही नहीं किन्तु बोलते बोलते, बीच–बीच में ध्यान रहे की श्रोता का ध्यान कहां है । क्या उसे हमारी बात सुनने में जरा भी रस है । कि वो बोर हो रहा हैं । इस लिए ध्यान रहें कम बोले, मिष्ट बोले और अर्थपूर्ण बोले ।

***

47. खुशियां आनंद हमारा हक है स्वभाव है

छोटी छोटी गेम खेलने से आनंद मिलता है । कसरत करना, प्राणायाम करना, मोर्निंग वोक करने से आनंद प्राप्त होता है । छोटे छोटे काम हम जो रोज के टार्गेट करते है और उसे पूरा करते है रात होती है अहसास होता है ६ में से ४ काम हो गये तो कितनी खुशी मिलती है इसलीये सुबह से अपने कामों का लिस्ट बनायें उसे दिन के दौरान मेनेज करें और पूरा करने की कोशिश करें और खुशी पायें ।

प्रशंसा और चापलुसी में फर्क है । हमें औरो की, दिल से प्रशंसा करनी चाहिये औरो में अच्छे गुण ढूंढना भी एक बड़ी कला है और एक बार हमें सामने वाले में अच्छे गुण दिखाई दिये तो हम उसकी प्रशंसा किये बिना रह नहीं सकते । प्रशंसा करने से भी एक खुशी मिलती है आनंद मिलता है । समय सेवा : अपने परिवार अपने अगल–बगल, अपने पडोस, अपने समाज में कई लोग रोज हमारे ईर्दगिर्द होते हैं । हम समय देकर सेवा कर सकते हैं । किसीका कुछ गिर गया समझो पेन या किताब हमने उसे उठाकर दिया तो वह सिर्फ सामनेवाला खुश होता है ऐसा नहीं बल्कि हमें भी खुशी मिलती है । ऐसे ही समाज में कई काम सेवा के है, इस लिये सेवा करते रहें जरुरी नहीं बड़ा–बड़ा दान करें । समय का दान दें । छोटे छोटे काम से भी खुश पायी जा सकती है ।

वोटसअेप पे नकारात्मक न्यूस फैलाना अच्छा नहीं है । ४–८ खराब बातें न फैलाये । कुछ लोगो की आदत होती है कि उन्हें अच्छी चीजें दिखाई ही नहीं देती दुनिया में जो कुछ ५–१५% खराब होता है उस पर ही ध्यान जाता है । साधु संत कितने अच्छे अच्छे महान होते है किन्तु उसमें से एक कोई खराब मिला तो बस उसी बात को पकड़ लेते है ।

हम समय देकर सेवा कर सकते हैं। एक साधु था उसके पास एक बहुत अच्छी घोडी थी। वह उस पर चढकर आसपास के गांव में अपने शिष्यों के साथ जाता था। पहाडी इलाका था इसलिये साधु को वह घोड़ी बहुत काम की थी और वह उसको अच्छे से रखता था। एक डाकु को मालुम पडा कि साधु के पास बहुत बढिया घोडी है जो पहाडो में भी कुद कर भागती है।

ऐसी घोड़ी तो हमारे काम की है। सोचा मांगने से कोई देता है क्या ? लुटकर लेना भी अच्छा नहीं। साधु को मारना भी ठीक नहीं। तरकीब निकाली अपंग बनकर रास्ते में बैठ गया और मालुम था कि आज शाम को उस गांव से साधु इस रस्ते से निकलेगा। साधु दयावान था। नीचे उतरकर उस अपंग को घोड़ी पे बैठा लिया। देखते ही देखते घोड़ी को डाकु ने भगा लिया। साधुने रोका यह बात किसीको नहीं बताना। डाकूने पूछा क्यों ? मैं तो समझा आप पूरे गांव में मेरी फरियाद करेंगे। साधु बोला नहीं, मैंने एक अपंग कि सहायता की है। इस बात को सुनकर लोग अपंग पर दया करना बंद कर देंगे और हर अपंग को डाकू ही समझेंगे इस लिए यह बात आप किसीको मत बताना।

* * *

48. जल्दबाजी में निष्कर्श न निकालें

हम अक्सर प्रपंच में लगे रहते है। दूसरे क्या करते है उनका हिसाब किताब माप तोल ताराजू में तोलते रहते है। अच्छा है बुरा है ऐसा किया वैसा किया दो घटनाएं सुनाता हूं – एक आदमी गली में से गुजरता है उसका अगल बगल रहते हुए लोगो से कुछ तालुक नहीं मतलब नहीं। देखते है कि एक आदमी खुर्सी पे बैठकर बगीचे को पाईप से पानी दे रहा है। सोचता है कैसा सुस्त आदमी है। बगीचे को भला कोई कुर्सी पर बैठ कर पानी देता है। आजकल लोग भी अपने को समझाने लगते है। जैसे ही वो आगे गया क्या देखता है कि एक अपंग व्यक्ति व्हील चेयर पर बैठके बगीचे को पानी दे रहा है। उसके अगल–बगल खडा रहने की घोड़ी/स्टेन्ड भी थी। उस आदमी का पूरा रवैया बदल गया। सोचा यह अपंग व्यक्ति कितना महान है कि इस हालत में भी बगीचे को पानी दे रहा है। इसलिये दूर से देखकर किसी पर अपना विचार नहीं थोपें। Don't judge others.

दूसरी घटना सब्जीवाली बाई की है – वो रोज गली में आती है एक महिला

उसकी ग्राहक है रोज सब्जी लेती है । उससे वो खुब कमाई करती है । एक दिन उस महिला के घर महेमान आते है सब्जीया रोज से ज्यादा चाहिये और थोडा जल्दी भी चाहिए । सब्जी वाली अभी तक आई नहीं राह देखते देखते थक जाती है । दूसरे दिन वो सब्जीवाली आती है तो उसके आते ही खबर लेती है । कल क्यों नहीं आई । मेरे घर मेहमान थे । उसको बहुत भला बुरा कहती है । बेचारी सुनती रहती है और अंत में बोलती है कल मेरी मां मर गई थी फिर भी मैं आज आई हूं आपको तकलीफ न हो इस लिये । हममें सब्र नहीं है हम केवल अपना ध्यान रखते है । दूसरो को सुनने की प्रतिक्षा करने की आदत नहीं ।

* * *

49. ईश्वर के उपर सम्पूर्ण विश्वास

हम सब ईश्वर के उपर विश्वास तो रखते है परन्तु चलाते अपनी है । अपनी मर्जी से काम करते है काम करने के बाद अटकते है तो फिर भगवान को याद करते है । किसी से बात करते करते हम ऐसे शब्द निकालते है कि सामने वाला नाराज हो जाये या झगडा करले । बोलने के तरिको पर तो समय पर ईश्वर को याद नहीं करते कि मुझे मीठा बोलना चाहिये या कडवा किन्तु जब काम बिगडने का डर लगता है तो ईश्वर को याद करते है कि भगवान अब बिगडी हुई बात को बना लेना ।

इसलिए भगवान पर पूरा विश्वास रखें । पूरा है विश्वास हम होंगे कामयाब । जो भी काम करें पूरा करें पूजा करते समय भगवान को चंदन तिलक लगाते है, परन्तु मन कहीं और है, ध्यान कहीं और है, थोडी देर बाद लगेगा और अगरबती कर ली दीया जला लिया परन्तु तिलक लगाना तो रह गया क्यों ? क्यों की मन कहीं और है ध्यान नहीं है फिर पूजा का फल भी थोडा ही मिलेगा । जब मेरा आपमें ध्यान नहीं है तो आप भी मेरा ध्यान क्यों रखेंगे । भगवान के साथ भी वैसा ही है । कुछ भी काम करो उसमें पूरा ध्यान दें । पढ़ाई करे, पाठ करे या रसोई बनाये पूरा करने के बाद मालुम पडा कि दो घंटे पढा लेकिन क्या पढा मालुम नहीं । फिर से पढ़ना पड़ेगा । रसोई में भी ध्यान से रसोई बनेगी तो स्वादिष्ट बनेगी ।

* * *

50. गाडी और शरीर

गाडी और शरीर दोनो एक जैसे है । जब हम गाडी में बैठ कर ड्राइवर की सीट पर बैठकर गाडी चलाते है तो उसकी स्टीयरींग हमारे हाथ में होती है । गाडी का कन्ट्रोल हमारे हाथ में होता है । हम मतलब ड्राइवर, गाडी को जब चाहे जहां चाहे ले जा सकते है, खडी कर सकते है । ठीक वैसे ही यह शरीर एक गाडी है जिसमें बैठी हुई आत्मा ड्राइवर है और शरीर को जैसे चलाना चाहे चलाती है उपयोग में लेती है । अच्छे रास्ते पे ले जा सकती है । जब गाडी काम की नहीं रहती तब ड्राईवर उतरकर चला जाता है दूसरी गाडी की तलाश में, वैसे ही अंत में यह आत्मा भी इस शरीर को छोडकर दूसरे शरीर की तलाश में चली जाती है । इस संसार में हमें क्या क्या सीखना चाहिये वो हमें पता होना चाहिये ।

एक नाव में दो तीन मुसाफिर बैठे थे नाविक से सवाल कर रहे थे तुम कहां तक पढे हो उसने बोला में अनपढ हूं फिर दूसरे ने पूछा तुम्हें इंग्लीश नहीं आती किसीने पूछा सोशियल स्टडीज आती है साईन्स, मेथस । वो खडा हो गया बोला एक बार तो बोला में अनपढ हु । मुझे कुछ नहीं आता । मैं जीना जानता हूं । तो उसमें से एक प्रोफेसर बोला तुम्हारा ८०% जीवन तो व्यर्थ गया कुछ नहीं आता २०% जीवन जीते हो । इतने में घने बादल आ गये बरसात और तूफान शुरु हो गये, नाव हिलने लगी तो नाविक ने बोला कि यह नाव कभी भी उथल सकती है । आप लोगो को तैरना आता है । सबने बोला नहीं नाविक बोला मुझे तो तैरना आता है में बच जाउंगा आप तो १००% डूब जाओगे । जीवन जीना सीखना चाहिये इस संसार में कैसे चले । प्रभु की राह में कैसे चले अध्यात्म के रास्ते में कैसे चले । ये ही सीखना चाहिये जो जीवन में आगे जाके काम आयें । इस लिये अपनी गाडी ऐसे चलाओ कि सीधी भगवान के पास जा पहुंचे ।

* * *

51. परमेश्वर का साथ

I am not alone because, GOD is always with me.

जब हम किसी भी मुसीबत में फंस जाते है तुरन्त हमें भगवान याद आता है । भगवान से प्रार्थना करते है कि मुझे इस मुसीबत से बचा लो । मेरी एक असली कथा है जब मैं छोटा था ९-१० साल का तीसरी -चौथी में पढता था तब मुझे मां एक रुपीया

दिया बोल जाओ दही ले आओ। १५ आना और एक पैसा वापिस लेके आना। तीन पैसे में २५० ग्राम दही मिलती थी।

मैं भी खेलता खेलता जा रहा था। रात के करबी ८ बजे थे। पता नहीं चला एक रुपीया कब और कहां गिर गया। दहीं की दुकान से दहीं ली। पैसा देने के लिये मेंने उसे बोला एक रुपये की नोट है देता हूं परन्तु ये क्या नोट न तो हाथ में न जेब में। मेरी हालत इतनी खराब हुई कटोरी वहीं दुकानदार के पास रखके उलटे पांव चला, रुपया ढूंढने। अंधेरा बढ गया था कितने ही कागज के टुकड़े हाथ में लेता परन्तु एक रुपये की नोट नहीं मिली। थका हारा वापिस घर आया सोचा मार मिलेगी पिताजी बाहर दूसरे शहर में गये हुए थे। मां और मौसी थी। मौसी मेरे साथ चल पडी। अब मेरी बारी थी भगवान को याद करने की। गले में काले धागे में शिव का पेंडल लटक रहा था भगवान भोलेनाथ को प्रार्थना की मुझे रुपीया दिला दो नहीं तो कल पिताजी आएंगे और मार पडेगी जोरदार। तब का एक रुपीया आज के ५०० की नोट के बराबर है। लालटीन की रोशनी में रुपये का नोट मिल गया। तब से आज तक भगवान भोलेनाथ पर पूरा भरोसा पूरा विश्वास।

जीवन में ऐसी घटनाए हरेक के जीवन में आती है परन्तु हर बार हर मुसीबत में हर खुशी में याद करो आइ एम नोट अलोन गोड इज़ वीथ मी। मैं अकेला नहीं हूं भगवान मेरे साथ है। रास्ता भूल जाओ अकेले पड जाओ, बच्चा गुम हो जाय, धंधे में नुक्शान हो जाय बस केवल ही केवल भगवान को याद करे हर एक निर्णय लेने से पहले भगवान से पूछे।

* * *

52. धन्यवाद और माफ करो

आजकल बिलकुल सामान्य शब्द हो गया है बात बात में हम केवल एक दूसरे को कहते है धन्यवाद। किन्तु क्या दिल से कहते हैं ? हम सचमुच तहदिल से शुक्रगुज़ार है ? धन्यवाद बोले तब, क्या साथ हमारी शरीर के भाव भी वैसे होते है ? यु आर मोस्ट वेलकम मतलब आप हमारी कभी भी मदद ले सकते है। आपका स्वागत है। क्या मोस्ट वेलकम बोलने वाला सचमुच इन्तजार कर रहा है दूसरी बार मदद करने के लिये। हम को किसी ने पानी का ग्लास पिलाया हमने थेन्कस बोला उसने वेलकम बोला किन्तु भाव

क्या है ? सच्चा धन्यवाद देने वाले बहुत कम लोग होते है । दिल से रिप्लाय करें, भाव से कृतज्ञ रहें ।

उसी प्रकार फोरगीव मतलब माफ करना । क्या हम दिल से किसी को माफ करते है । सामनेवाला सोरी बोले तो कुछ लोग बोलेंगे, नेवर माइन्ड कोई चिन्ता मत करो । मतलब आपसे भूल हो गई है उसे मैं मन में कभी नहीं लुंगा । आप चिन्ता न करे परन्तु क्या यह भाव से है । बोलेगे नेवर माईन्ड किन्तु इस बार तो छोड देता हूं किन्तु दूसरी बार कसर निकाल लुगा, रिप्लाय होता दिल से । ठीक है कभी किसी कुछ मजाक में कह भी दिया तो क्या ? उसका स्वभाव ऐसा है । हमसे भी तो गलती होती है । हर इन्सान से गलती होती है । बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय । जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय । बोलने में तो कबीर का दोहा गाने में मजा आता है परन्तु प्रेकटीकल लाइफ में ही सबसे अच्छा गलतीयां तो दूसरे ही करते है । मुझसे गलतीयां होती ही नहीं में तो दूध से धोया हूं । नहीं छोडुंगा दूसरी बार देख लूंगा । है ही बेकार । हम अक्सर यह भाव लेके बैठते है । कभी ऐसा भी सोचते है हर इन्सान का स्वभाव अलग है । उसका लाइफ स्टाइल अलग है उसकी पढाई कम है । छोड दो, माफ करदो, मुझे ही समझना चाहिये मुझे ही उससे ढंग से बात करनी चाहिये, प्यार से बात करनी चाहिये । मेरी ही गलती है । मुझे ही दूर से ही राम राम करने चाहिये । बात तब ही बनेगी जब हम खुद को ही जवाबदार मानेंगे माफी मांगेगे और माफी मांगो ।

* * *

53. सहज से जो होता है उसे स्वीकार करें

हम सबका भगवान में पूर्ण विश्वास है हम समझते है भगवान है हम उसके भक्त है भगवान जो कुछ भी करता है भले के लिये करता है । किन्तु जब कोई भी घटना हमारे सोच के विपरीत होती है हमारी आशा आकांक्षा के मुताबक नहीं होती तो हम दु:खी हो जाते हैं ।भगवान को कोसने लगते है, कोई ऐसी बीमारी हो जो हमने सोची भी न हो हमारे प्यारे बच्चे या कुटुम्ब के सदस्य को हो जाये तो हम रोने लगते है कि भगवान मैंने ऐसा क्या बिगाडा । हम स्वीकार नहीं कर सकते । सहजता में नहीं ले सकते । एक सज्जन बैंकमें नोकरी करते थे एक बार उसकी बदली हुई । उसे आशा थी कि कितने समय से कोशिश कर रहा हुं, अब तो मेरी वतन में बदली होगी किन्तु बदली हो गई अन्यत्र वो भी कोई

अच्छी जगह पर नहीं, जहां उसे जाना नहीं था, उससे खराब स्थल पर ।

थोडे समय बाद उसके मुल जगह पर फिर बदली हुयी और उसके स्थान पर जो आया उस पर दोष लगा और वो सस्पेन्ड हो गया । उसने सोचा अचछा हुआ मेरे बदली हो गई नहीं तो मेरी हालत क्या होती तब उसे मालुम पडा की ईश्वर ने जो किया उसमें भला था । हम स्वीकार करना सीखे । भले हमारा खराब भी हो तब भी ऐसा सोचे कि मेरे से कुछ भूल हुई होगी इसलिये ईश्वर मुझे यह सब दे रहे हैं । हरेक के जीवन में ऐसी घर्षण होती रहती है । कभी कभी कोई बडा कष्ट लिखा होता है किन्तु छोटे में टल जाता है । कहते है कि तीर चला, सिर नहीं कटा केवल टोपी उतर गई । भगवान के प्यारो के लिये भगवान के भक्त के लिये ईश्वर कभी बुरा नहीं करता । हमें पूर्ण विश्वास होना चाहिये और जो भी हो उसे सहज में स्वीकार कर लेना चाहिए ।

* * *

54. कुछ भी किया हुआ काम व्यर्थ नहीं जाता है

गीता में भी भगवान ने कहा है कि कर्म किये जा, फल की इच्छा मत कर । बस अच्छे कर्म करते चलो अपने आप अच्छे फल मिलेंगे । एक बार भुज में गेस्ट हाउस के लिये आफीसर आए । रात को ११ बजे ठंडी की रात सोने के लिये बिस्तर दिये । इतना खुश हो गये कि बस । कुछ सालो के बाद मेरे चचेरे भाई इन्टरव्यु गांधीनगर में था । वो ही साहब मिलगये । पहचान गए । बोले तुम्हारा यह भाई तो सीलेक्ट। कुछ भी अच्छा किया हुआ व्यर्थ नहीं जाता है ।

* * *

55. हम अक्सर भगवान को दोष देते है

जो अच्छे काम करते है उसका श्रेय हम स्वयं को देते है । ये मैंने किया वो मैंने किया । जब कुछ गलत हो जाता है तो हम दूसरों पर दोष लगाते है या तो भगवान उपर ही दोष लगाते है ।

* * *

56. किसी से कुछ ले नहीं

इस जन्म में देना पडेगा अगले जन्म में देना पडेगा । बेटा बनके वसुल करेगा । करोडपति रोड पति हो गये एक कपडे का व्यापारी पैसे वालो के घर मंदबुद्धि बच्चे । किसी से कुछ न ले, देने को टुकडा भला लेने को हरि नाम ।

* * *

57. માં-બાપ

પરમાત્માના પ્રતિનિધિ છે અથવા ઈશ્વર તુલ્ય છે. એ વાતમાં કોઈ શંકા નથી. જીવ જયારે ઈશ્વર પાસે હતો અને ભગવાન એને ધરતી ઉપર મોકલે છે ત્યારે તે પરમાત્માને પૂછે છે મને ખવડાવશે કોણ ? ઈશ્વર કહે છે હું. તો મને નવડાવશે કોણ ? ભણાવશે કોણ ? કપડા કોણ આપશે ? ઈશ્વર કહે છે હું. દરેક વાતમાં દરેક પ્રશ્નમાં પ્રભુ કહે છે હું તારી સાર-સંભાળ લઈશ. જીવ કહે છે પ્રભુ આપ તો એકલા છો પછી આટલા બધા કામ માટે આપ એકલા કેમ પહોંચી વળશો અને ધરતી ઉપર આટલા બધા લોકોને આપ મોકલો છો બધાની સાર-સંભાળ આપ એકલા કેવી રીતે કરી શકશો ? પ્રભુ જવાબ આપે છે હું ફકત બેજ રૂપ લઈશ એક માં અને એક બાપ. ગર્ભાવસ્થાથી લઈને તમે મોટા થાઓ ત્યાં સુધી હું મા-બાપ રૂપે તમારૂં ધ્યાન રાખીશ.

તે વાત ખરી છે કે પ્રભુ પોતે માતા-પિતાનું રૂપ લઈને જીવનો, આપણો ખ્યાલ રાખે છે એટલે જ મા-બાપ પ્રભુ પરમાત્માના પ્રતિનિધિ છે એમાં કોઈ બે મત નથી. આપણે બધા જાણીએ છીએ કે મા-બાપ પ્રભુના રૂપ છે, પૂજનીય છે અને માતા-પિતાની સેવા કરવા ઈચ્છીએ પણ છીએ છતાં માતા-પિતા દુઃખી હોય છે. શું આ એક જનરેશન ગેપ અથવા પેઢી દર પેઢીનો ફરક છે ?

આજથી ૫૦૦૦ વર્ષ પહેલાની પુસ્તકમાં લખેલું છે કે આજકાલની ઔલાદ મા-બાપનું માનતા નથી. દરેક વસ્તુના બે પાસા હોય છે. સિક્કાને બે પહેલુ કે બાજુઓ હોય છે. મા-બાપ દુઃખી હોય છે એના કારણો પર ધ્યાન આપીએ તો કદાચ નીચેની વિગતો સાચી લાગશે.

- ઘણા મા-બાપ મોટી ઉપરના કારણે સંતાન સાથે ચાલી શકતા નથી અને પોતાના પ્રમાણે ૨૫-૩૦-૪૦ વર્ષ પહેલાના સમયથી આજની

પરિસ્થિતિનું મુલ્યાંકન કરતા હોય છે અને પોતાના છોકરાઓને-વહુઓને દોષી ઠહેરાવતા હોય છે.

- મોટી ઉમરના લોકોનો એક સ્વાભાવ એ હોય કે કામ શરીરથી થતું હોતું નથી પરંતુ જીભ ચપ્પુની માફક ચાલે છે અને વધુ બોલવાથી વડીલો કયાંકને કયાંક સંતાનની બદનામી કરતા હોય અને તેમના દોષોને ઢાંકવાને બદલે ઉઘાડા કરતા હોય છે, જે સંતાનોને ગમતું નથી, માટે સંબંધો બગડી જાય છે.
- અલ્પતમ ક્ષેત્ર એમ કહે છે કે બીજાનું ખાસ કરીને પોતાના સંતાનની પ્રશંસા કરો. ખરાબ હોય તો એમ વિચારો કે એની કયાંકને કયાંક મજબુરી હશે તો મારી પાસે આવતો નથી. મારી વાત સાંભળતો નથી.
- મોટી ઉમરમાં મા-બાપની અપેક્ષા હોય કે -
- હું બીમાર પડું કે તરત ડોકટર પાસે લઈ જાય.
- સવાર-સાંજ અથવા બે-બે કલાકે મારી સાર-સંભાળ રાખે.
- મારી વાતો સાંભળે.
- હું કહું એમ કરવા તૈયાર થાય.

આ બધી વાતો સંતાનો પાસેથી અપેક્ષા રાખવી બરાબર છે પરંતુ આજની પરિસ્થિતિ પ્રમાણે સંતાનો પાસે સમય નથી.

- હરીફાઈનો જમાનો છે. ૧૨-૧૨ કલાક કામ કરવું પડે છે. સરકારી કે પ્રાઈવેટ કોર્પોરેટ નોકરી સવારે જાય સાંજે થાકેલો આવે.
- સ્ત્રી-પુરૂષ બને જણ કમાવા જતા રહે. પોતાના બાળકોનું મુશ્કેલથી ધ્યાન રાખી શકે.
- કેરીયર માટે સ્થળ બદલતા હોય.

આ બધી તકલીફો હોય છતાં બનતા પ્રયત્નો કરતા હોય. પોતાના મા-બાપનું ધ્યાન રાખવું પરંતુ આમ કરવા છતાં જયારે પ્રશંસાની બદલે કટાક્ષ સાંભળવા મળે તો છોકરાઓની સહનશક્તિ ખૂટી પડે અને અંતે સંબંધો તૂટતા વાર લાગતી નથી.

ઉપસંહાર : સારાંશ એ જ છે કે મા-બાપ અંત સુધી સંતાનો સાથે રહે એમનાથી ભુલચુક થાય તો જાહેરમાં ન કહે. એમના દ્વારા કરેલા બે ખરાબ કામોને ઢાંકી દે અને બે સારા કામો માટે પ્રશંસા કરે. પ્રસંગે કે ઉત્સવ પર ભેટ-સોગાતથી

બાળકોને પ્રોત્સાહિત કરતા રહે. પોતાના પૈસા પોતા પાસે રાખે અને થોડું થોડું વાપરતા રહે. નદીની જેમ ધીમે-ધીમે વહેતા રહે.

સંતાનો પાસે મા-બાપ મોટી ઈજજત હોય છે. કંઈક કરી છુટવાનો જુસ્સો હોય છે પરંતુ સહનશક્તિ હોતી નથી થોડું સાંભળવું પડે એટલે બસ મા-બાપને એનાથી કંઈક ઊંચા અવાજે સંભળાવી દેશે. આવા સંજોગોમાં સહનશક્તિ રાખીને મા-બાપની સેવા કરવાથી આ જન્મમાં જ ફળ, આર્શીવાદ મળશે. આર્શીવાદથી જે અશક્ય કામો પણ પાર પડશે. જરૂર છે માત્ર થોડી શાંતી રાખવાની. થોડો સમય માતા-પિતા માટે જરૂર કાઢવાનો જેથી એમના આશિષ મળતા રહે. એમનો પ્રેમભાવ મળતો રહે પછી જુઓ જીવન સ્વર્ગ બની જશે.

* * *

58. દીનબંધુ દીનાનાથ મેરી ડોરી તેરે હાથ

હે પ્રભુ, હું કંઈ જાણતો નથી. હું પૂરેપૂરો તમારી શરણમાં આવેલો છું. મને શું સારૂ શું ખરાબની કંઈજ ખબર નથી. મને સારા નરસાની જાણ નથી. આપ જે રસ્તે ચલાવો તે રસ્તે ચાલવા તૈયાર છું. હું આપનો ઈન્સ્ટ્રુમેન્ટ છું. આપની પકડ અને સ્ક્રુડ્રાઈવર છું. આપ મને જે રીતે વાપરો તે રીતે હું સંમ્પૂર્ણ રીતે બીનશરતી આપનો હથીયાર છું મને ચલાવો પ્રભુ. હું હર પલ ગભરાઈ જાવું છું. શું થશે મારૂ ? મારા બાળકો સગા સંબંધીઓનું શું થશે ? મારા કુટુંબ કે પરિવારનું શું થશે ? એ જ કાયમ ચિન્તા કર્યા કરૂ છું. હું ભુલી જાવું છું કે હે પરમેશ્વર, હે દીન દયાળ, હે મારા તાત આપની કૃપાની જ મુજ રંકને જરૂર છે. આપની દયા વગર હું ચાલી શકું તેમ નથી. મારો કોઈ ચીર તત્વ નથી. હું કેમ ગભરાઉ છુ. મેં કઈ ગુનો કર્યો નથી તો આપ મારો ખરાબ શું કામ કરશો ? હું આપનો બાળક છું - બાળ ગોપાળ છું. પોતાના સંતાનની રક્ષા કરવી એ જ માવતર નો ધર્મ કર્મ છે. આપ મારી રક્ષા કરશો. આપ મારૂ કલ્યાણ કરશો મને સંમ્પૂર્ણ વિશ્વાસ છે.

થોડા સમય માટે કોઈ તકલીફ, કોઈ મુસીબત અથવા કોઈ આપણે ન ગમતો થાય છે તો હું ગભરાઈ જાવું છું એટલી હદે કે ઘણી વખત આત્મહત્યાની કલ્પના કરૂ છું. આ ઘર છોડીને ભાગી જવાના વિચાર આવે છે. આ દુનિયા છોડીને સન્યાસી થઈ જવાની કલ્પના કરૂં છું. પણ હું ભુલી જાવું છું કે હું જ્યા પણ હોઈશ - જ્યાં પણ રહીશ, આપની કૃપા, આપની દયાની જરૂર દરેક સ્થળે, દરેક પળે મને પડવાની જ છે

માટે હે પ્રભુ, હું સંપૂર્ણ પણે આપની શરણમાં છું. મારી જીવન દોરી આપના હાથમાં છે હું ઘોડો છું કે રથ છું. જેની લગામ આપની પાસે છે. આપ જેમ ચલાવશો તેમ હું ચાલીશ. ફક્ત જરૂર છે આપની દયાની, આપની કૃપાની.

દીનબંધુ દીનાનાથ મેરી ડોરી તેરે હાથ. આપણે ઓટોરીક્ષામાં બેસીએ છીએ. તો બધુ ભુલીને આરામથી અંદર વાતો કરીએ છીએ ડ્રાઈવર પોતે મંજીલ ઉપર પહોંચાડશે એવો ભરોશો હોય છે. પ્લેન માં બેસીએ તો પાયલોટ ઉપર ભરોસો હોય છે. પ્લેનમાં આરામથી ખાઈએ પીએ, હરીએ ફરીએ, આરામ કરીએ છીએ. કેમ કે પાઈલોટ ઉપર ભરોસો છે. તેવી રીતે મને પ્રભુ/ઈશ્વર ઉપર ભરોસો હોય, બધુ એના ઉપર છોડી દઈએ તો પછી ચિંતા શેની ? મુકત થઈને જીંદગી જીવીએ. દીનબંધુ દીનાનાથ મેરી ડોરી તેરે હાથ.

* * *

59. મોજમાં રહેવું મોજમાં રહેવું રે

દરેક પળને જીવો. દરેક સેકન્ડને એન્જોય કરો. દરેક પળને માણો. જીંદગી અમૂલ્ય છે. બજારમાં બધી વસ્તુઓ મળે છે એક જ સમય નથી વેચાતો, મળતો કે નથી પાછો આવતો. જે સમય વીતી ગયો એનો અફસોસ ન કરીએ પરંતુ હાલમાં દરેક પળમાં પ્રભુનો ઉપકાર માનીએ અને હરપલ સ્મિત સાથે જીવીએ, ખુશ રહીએ. ખુશ રહેવામાં જ મજા છે. સમય નીકળી જશે. જીંદગીની નાની-નાની ખુશીઓનો લ્હાવો લઈએ. મોટી ખુશીની રાહમાં વર્તમાનને ન ભુલીએ અને ન તો દુઃખી થઈએ.

જમવાનું સારું મળે એટલે પ્રભુનો આભાર માનીએ. જેમણે જમવાનું બનાવ્યું છે તેની પ્રશંસા કરીએ. બનાવનાર ખુશ થશે તો એ ખુશી આપણને પણ મળશે. હોટલમાં જમવા જઈએ તો હોટેલવાળાની પ્રશંસા કરીએ કે જમવાનું સારું છે. ફરવા જઈએ તો સારા સ્થળ જોઈને રાજી થઈએ પ્રભુ તારી પ્રકૃતિ અજબ છે. આવી સુંદરતા મેં કયારેય જોઈ નથી. શું પર્વત છે ? શું નદી છે ? આવી અદભુત સુંદરતા નિહાળી શકયા એ માટે આંખનો આભાર માનીએ. આવી રીતે જીવનમાં દરેક ક્ષણને હકારાત્મક રીતે જીવીએ. દરેક વસ્તુઓમાં પ્રભુની અપંરપાર કૃપા છે દયા છે. પ્રભુ આનંદ કરાવે છે. ખુબ ખુશ થઈએ. ખુબ રાજી થઈએ અને ઈશ્વરને ધન્યવાદ આપીએ. દરેકની પ્રશંસા કરીએ. એ આનંદ અનેક ગણું થઈને આપણી પાસે પાછું આવશે. ખુશ રાખવાથી જ ખુશી મળશે.

* * *

60. ગીતા સંદેશ (પ્રથમ અધ્યાય)

જે વ્યક્તિ અધર્મી હોય છે તે હંમેશા ડરપોક હોય છે એને કયાંક ને કયાંક ડર હોય છે કે હું હારી જઈશ તો ? મરી જઈશ તો ? મારી ઈજજત જતી રહેશે તો ? આ બાબતોની એ બહુ સાવચેતી રાખતો હોય છે. જયારે દુર્યોધન યુદ્ધની વચ્ચે ગુરૂવર આચાર્ય દ્રોણાચાર્યને કહે છે આપણી સેનામાં બધા શુરવીર છે અને એકથી એક તમામ વીર મારા માટે લડવા તૈયાર છે એની સાથે પાંડવોની સેનામાં એટલા બધા વીર નથી માટે આપણી સેના ચડિયાતી છે તેમ છતાં તે આચાર્યને સાવચેત કરે છે તમે બધા સેનાપતિ ભિષ્મપિતામહને ઘેરીને રહેજો એનું વિશેષ ધ્યાન રાખજો. આ દર્શાવે છે કે દુર્યોધન ધર્મ ઉપર ન હોવાના કારણે જ એને પોતાની જાત પર શંકા હતી. તેથી તે કોઈ રીતે સેનાની વ્યવસ્થામાં કચાશ રાખવા માંગતો ન હતો. આજના જમાનામાં પણ જયારે ચુંટણી થાય છે ત્યારે જે પક્ષ સત્ય ઉપર ચાલતું નથી એને બહુ જ ડર હોય છે તે દરેક જાત-જાતના શસ્ત્રો અને પૈસાનો ઉપયોગ કરે છે કારણ કે તેને ડર છે.

ચુંટણી સિવાયના રોજબરોજની જીંદગીમાં પણ આપણે જોઈએ છીએ કે સ્કૂલમાં શિક્ષક પાસે જયારે બે વિદ્યાર્થીના ઝગડાનો ફેસલો કરવાનો આવે ત્યારે જે વિદ્યાર્થીમાં ખોટ હોય તે પહેલાથી વગર પૂછયે શિક્ષકને સાચા-ખોટાની ફરિયાદો બુમો પાડીને કરે છે અને સાચો વિદ્યાર્થી ચુપ રહે છે ફકત પુછવા પર જ જવાબ આપે છે. કહેવાનો ભાવાર્થ એ છે કે આપણે જીંદગીમાં ડરવાની કોઈ જરૂર નથી. આપણે ધર્મ ઉપર ચાલવાની જરૂર છે. સત્ય ઉપર ચાલવાની જરૂર છે. કેમ કે અંતે સત્યની જીત હોય છે. સાચા માણસને થોડા સમય માટે તકલીફ થશે. ખોટા માણસો લાઈનમાં ઘુસી જશે. સાચો બિચારો પાછળ રહી જશે. ટિકિટ બારી બંધ થઈ જશે, પરંતુ પ્રભુમાં જેને વિશ્વાસ છે એ કદી ધર્મથી ડગતો નથી. સત્ય ઉપર અડગ રહે છે અને અંતે જીત સત્યની થાય છે. અંતે જીત પાંડવોની થાય છે. આપણે બધાને ખબર છે આપણા ઘરો કે પરિવારમાં પણ ઝઘડા થતા હોય છે. એવી રીતે ખોટા જે હોય જોર-જોરથી બોલીને પોતાને સાચું ઠેરવી લે છે અને ઢીલા માણસને સાંભળવું પડે છે. બે

ભાઈઓના ઝગડામાં પિતા કદાચ ઢીલા છોકરાને વઢીને ઓલા લુચ્ચા છોકરાને સજા ન કરે એવું બની શકે પણ મા ઢીલા છોકરાને હૃદયથી લગાવીને પ્રેમથી કહે છે ચિંતા નહીં કરવાની હું તારી સાથે છું. એવી રીતે લુચ્ચા માણસો કદાચ આ દુનીયામાં ફાવી જશે પરંતુ પ્રભુ માં ની જેમ હૃદય સમો લગાડીને પ્રેમ કરે છે અને એ જ સાચી જીત સમજવી.

* * *

61. અર્જુનનો મોહ (પ્રથમ અધ્યાય)

ભગવાન શ્રી કૃષ્ણ રથને બંને સેના વચ્ચે ઊભો રાખે છે. અર્જુન કહે છે કે આ વખતે મારા સગાઓ કે મારા પૂજનીય છે માટે મારે કઈ રીતે તેમને હણવું. હવે પ્રશ્ન એ થાય છે કે યુદ્ધભૂમિમાં લડવું કે ન લડવું ? સગા સંબંધીઓ વિશે તો પહેલા વિચારવું હતું. યુદ્ધભૂમિમાં એક જ ધર્મ હોય કે વિજયી થવું. મોહ ઘણી વખત આપણને આપણી ફરજ પુરી કરવા જઈએ ત્યારે શું કરવું શું ન કરવું એમ વિચારવાથી આપણું કર્મ પુરૂં થતું નથી. આપણને મોહ ઉત્પન્ન થાય છે. આ મોહ કોઈ સારું કાર્ય કરવા દેતો નથી.

મોહ છે સગા-સંબંધીઓનો પોતીકાનો મોહ, પુત્ર-પૌત્રાઓને આપણને સત્સંગમાં આવવા દેતા નથી. આપણે સત્સંગમાં આવી પણ જઈએ તો પણ ઘણી વખત આપણો મોહ છુટતો નથી. મોહ હોય છે કે મારી ઈજજત થાય, મોહ હોય પ્રસાદનો, મોહ હોય પ્રસાદ ઘરે લઈ જવાનો, મોહ હોય માઈક ઉપર ગાવાનો આવા અનેકાનેક જાતના મોહ અર્જુનની જેમ લઈને આપણે ફરીએ છીએ.

એમ નથી કહેતા કે મારો પ્રભુ જે કરાવશે તે હું કરીશ. મારા કૃષ્ણ ભગવાન જેમ અર્જુનને સાચું જ્ઞાન આપે છે એ જ રીતે મને પણ આપશે. પ્રભુ મારા પાસે સારા કાર્યો કરાવશે. શક્તિ આપશે તો હું આ દુનીયાના બધા મોહ મુકીને એક જ પ્રભુને શરણે પડીને એની ચીંધેલી રાહ ઉપર ચાલવાનો પ્રયત્ન કરીશ. એ જ પ્રાર્થના છે પ્રભુ પાસે.

* * *

62. ભગવદ ગીતા (દ્વિતીય અધ્યાય)

અર્જુન ભગવાનને કહે છે, હું મારો મુળ સ્વભાવ ભૂલ્યો છું. જેમાં મારું હિત હોય તે નિશ્ચિત મને કહો. હું તમારો શિષ્ય છું. આપણા કોઈ સગા-સંબંધી ચાલ્યા જાય તો કેટલું દુઃખ કરીએ છીએ. ઘણા એટલી હદ કરે છે કે બેહોશ થઈ જાય અને પોતાની તબીયત બગાડી નાખે. અરે આ દુનિયામાંથી જવાની કયાં વાત કરો છો માત્ર કોઈ બીમાર પડી જાય કે હાલતા પડી જાય અથવા બીજી કોઈ તકલીફ આવી જાય તો પણ એટલી હદે ચિંતા કરીએ કે જેનો કોઈ પાર ન હોય.

આપણે માણસ છીએ ભગવાન નથી. આપણે દરેકની પીડાનો અહેસાસ થવો જોઈએ. એનો અર્થ એવો નથી કે કુટુંબમાં કોઈની પણ તકલીફ જોઈને પોતે બીમાર પડી જઈએ કે મદદરૂપ થવાને બદલે બીજાની મદદની આપણે જરૂર પડી જાય. ઘરની સ્ત્રી પોતાના પુત્ર, પૌત્રા, દીકરીઓની એટલી હદે ચિંતા કરતી હોય છે કે પોતે પોતાની જાતને તકલીફમાં નાખી દે છે અને ચિંતાના કારણે બિમાર પડી જાય છે.

* * *

63. સહેજે જે થાય એ સ્વીકાર

પ્રભુ જે દે એ સ્વીકાર-કુબુલ, સૌથી વધારે દુઃખ જયારે આપણો કોઈ સગો ભગવાનને પ્યારો થઈ જાય. કોઈના પતિ કરતા પણ પેટ જણા દીકરો કે દીકરી જાય તો તે દુઃખ માતા માટે અસહનીય હોય છે. પિતા માટે પણ હોય છે પણ જેના ઉદરમાંથી જન્મેલ હોય એના માટે આ દુઃખદાયી હોય છે. પરન્તુ સ્વીકાર ર્ક્યા સિવાય છુટકો નથી. પ્રભુના રાજીપામાં રાજી રહીને સ્વીકાર કરવાથી દુઃખ ઘટી જાય છે. સ્કૂલમાં ફાઈનલમાં ઓછા માર્કસ આવ્યા. એડમિશન મળે નહિ. નોકરી મળે નહીં. ઈશ્વરની મરજી સમજીને એ જ પ્રાર્થના કરીએ કે હે પ્રભુ હે મારા ઈષ્ટ દેવ, મેં જે કંઈ ભુલ કરી હોય તે માફ કરજો અને મારા દુઃખ હરી લેજો. પ્રભુ પ્રાર્થના કરવાથી બગડેલા કામ બની જાય છે.

બીમારીમાં પણ સાચા દિલથી ઈશ્વરને યાદ કરીશું તો આપણા દુઃખ દૂર થઈ જશે. દરેક વાતમાં સવારથી સાંજ સુધી એક જ વાત યાદ રાખીએ કે પ્રભુ જે કરે છે મારા ભલા માટે કરે છે. પ્રભુ મારો મિત્ર છે માટે એ મારું કલ્યાણ જ કરશે. ભગવાન

કૃષ્ણ એના ભક્તો માટે બધું સારું જ કરે છે. અર્જુનને ગીતામાં જ્ઞાન આપેલ છે. અર્જુન ભલે ભગવાનને કહે કે હે પ્રભુ મને કર્મયોગમાં કેમ લગાડો છો પરંતુ શ્રી કૃષ્ણ ભગવાન કહે છે કે હું ન માત્ર તારા ભલા માટે નહીં પરંતુ સકલ જગત માટે, તમારા કલ્યાણ માટે તમને આ જ્ઞાન આપી રહ્યો છું. કર્મયોગમાં લગાડી રહ્યો છું.

આપો દ્રષ્ટિમાં તેજ અનોખું સારી સૃષ્ટિમાં શિવ રૂપ દેખું. જયારે સમ્પૂર્ણ જગત શિવમય છે તો પોતાનું કે પારકું એ પ્રશ્ન જ કયાં રહે છે. પ્યાર કરવામાં જે આનંદ થાય છે એ આનંદ કોઈ વસ્તુમાં નથી. પ્યાર કરો. જયારે જવાન હતા ત્યારે કેમ કોઈ છોકરીના ચક્કરમાં પડી પ્યાર કરતાં હતા એટલે સ્કૂલ કોલેજની દીવાલો ઉપર, પીકનીકમાં જઈએ તો પથ્થરો ઉપર રસ્તા ઉપર વાસુ સપના વાસુ સપના એજ પ્યાર દર્શાવતા.

એવું જ પ્યાર પ્રભુ સાથે પણ કરીએ. પ્રભુને જીવનસાથી લાઈફ પાર્ટનર, ઈષ્ટદેવ જે ગણીએ એને પ્યાર કરીએ. જે આપીએ એ જ રિફલેકટ થઈ પાછું મળે છે. જેવું આપશું એવું જ મળશે. સ્મિત કરો સામે વારો સ્મિત કરશે. દાદા ટી.એલ.વાસવાણીની પ્યારની વ્યાખ્યા, ધર્મની પરિભાષા ત્રણ શબ્દોમાં પ્યાર પ્યાર પ્યાર. પ્યાર એ જ ધર્મ. ધર્મ એ જ પ્યાર.

* * *

64. કોઈને ત્યાં ખાવું પીવું નહિં

બને ત્યાં સુધી ઘરમાં જ ખાવું, ઘરનું જમવાનું, બહાર જમો તો ખાવાનું અને પાણી પણ પોતાનું લઈ જવું જયાં સુધી શક્ય હોય. કોઈને ત્યાં ગયા, ચાયનો વિવેક થાય તો કહેવું હમણા જમીને નીકળ્યા. ચાય બહુ ઓછી પીવું છું. વારંવાર ચાય ગમતી નથી કોઈપણ બહાનું કાઢી બીજાને ત્યાં ખાવાનું ટાળવું. દરેક ભોજનમાં પાણી હોય પાણી તરત જ અભિમંત્રિત થઈ જાય. સારા વિચારોથી અને અપવિત્ર વિચારોથી. આપણને ખબર ન પડે. સામેવાળાનો ભાવ સારો હોય આપણને દિલથી જમાડતો હોય પરંતુ કામવાળીએ કયા ભાવથી બનાવ્યું હોય. એ મહત્ત્વનું છે. મોટા ભાગે આપણે ત્યાં સદાભાવથી જ બનતું હોય પરંતુ શરતચૂકથી કયારે કયારેક ઘરમાં ઝઘડો થયેલ હોય અને મનમુટાવ હોય અને આનંદથી ખાવાનું બનાવેલ ન હોય તો પણ આ ખાવાનું ટાળવું જોઈએ.

આપણા સાધુ સંતો કોઈને ત્યાં જમતા નથી. કાચું સીધું જ લેતા, કેમ કે એમાં પાણી નથી હોતું પાણી તરત જ અભીમંત્રીત થઈ જાય છે અને આપણા શરીરમાં ૭૦% પાણી જ છે તાત્કાલીક અસર થઈ જાય છે એટલા માટે મંદિરમાં બનેલું ભોજન/પ્રસાદ પવિત્ર હોય છે. આપણા ધાર્મીક ગ્રન્થો જ્યાં વંચાય ત્યાં પાણીનો લોટાં અથવા ગ્લાસ રાખવામાં આવે અભિમંત્રિત થઈ જાય પછી એ પાણી પીવાથી બધાને, એ ગ્રન્થના વાઈબ્રેશનનો લાભ મળે. કોઈપણ કથા થતી હોય શ્રી સત્યનારાયણ ભગવાનની, દશામાની, વૈભવ લક્ષ્મીની દરેક કથામાં પ્રસાદ સાથે જળ કે પંચામૃત હોય છે જે અભિમંત્રિત થઈ જાય છે જે બહુ ફાયદાકારક છે.

આપણે કથામાં આરતી પછી બે ચમચી જળ ભરી બધા શ્રોતાઓને છાંટવામાં આવે છે જે બધા શ્રદ્ધાથી સ્વીકાર પણ કરે છે. એટલા માટે બીજાને ત્યાં તો ઠીક પણ રેકડીએ કે હોટેલોમાં તો ન છુટકે જ ખાવું જોઈએ. કેમ કે એ ભોજનમાં કેવો ભાવ છે એ આપણને ખબર નથી. ઘણી હોટલોમાં રસોડામાં લક્ષ્મીની આરતી અથવા ધુન ચલાવવામાં આવતી હોય છે એ બહુ સારી વાત છે. આપણી ગૃહીણીઓને પણ ભોજન બનાવતી વખતે રસોડામાં મંત્ર જાપ કરવા જોઈએ. ઘણી બહેનો કરે પણ છે.

* * *

65. If you are hurt, Please check it is your ego

ઘણી વખત આપણને મનદુઃખ થાય કોઈ મિત્ર, સગા-વ્હાલા બે શબ્દ કહી જાય તો મન ને ગમે નહીં. મન દુઃખી થાય આખો દિવસ આખી રાત એ જ શબ્દો દિમાગમાં વારંવાર આવે. કામમાં હોઈએ તો ભુલી જઈએ પરંતુ ફ્રી થઈએ તો ફરીથી એ જ વાત. દાદા કહે છે આ તમારો ઈગો છે. હું પોતાને કંઈ સમજું છું. મને આમ કેમ કહી ગયું. અરે મારો પટ્ટાવાળો મને આમ કહી જાય પરંતુ સંતો કહે છે કે જેને જેટલો ઈગો એને વધારે ગીલ્ટ થાય.

ઘણી વખત આપણે તરત જ બદલો કરીએ. સામેવાળાને તરત સંભળાવી દઈએ નહિતર મનમાં ધુંધવાયા કરીએ પરંતુ આપણી બુદ્ધિને વાળીએ તો તરત જ

મુકત થઈ જઈએ. માઈન્ડ તરત જ ખાલી થઈ જઈએ. માત્ર એટલું જ વિચારવાનું કે એની તો બુદ્ધિ એટલી છે. એને અક્કલ નથી. એ તો અભણ છે. ભણેલો ગણેલો છે પરંતુ એને સ્વભાવ એવો છે. એ બધા સાથે એમ જ કરે છે. જેવું કરશે તેવું ભોગવશે એ એના કર્મ, આપણે તો એને જવાબ નહીં આપવાનો. એનાથી દૂર રહેવાનું, મતલબ જેવી પરિસ્થિતિ હોય તેવું વિચારીને મનને શાંત રાખી શકાય.

* * *

In Loving Memory of...

Late Smt. ANJALI TARUN SETHI

...From...

Shri H.H. Navani (Father)
Shri Vinod Sethi (Father in Law)
Shri Tarun Sethi (Husband)